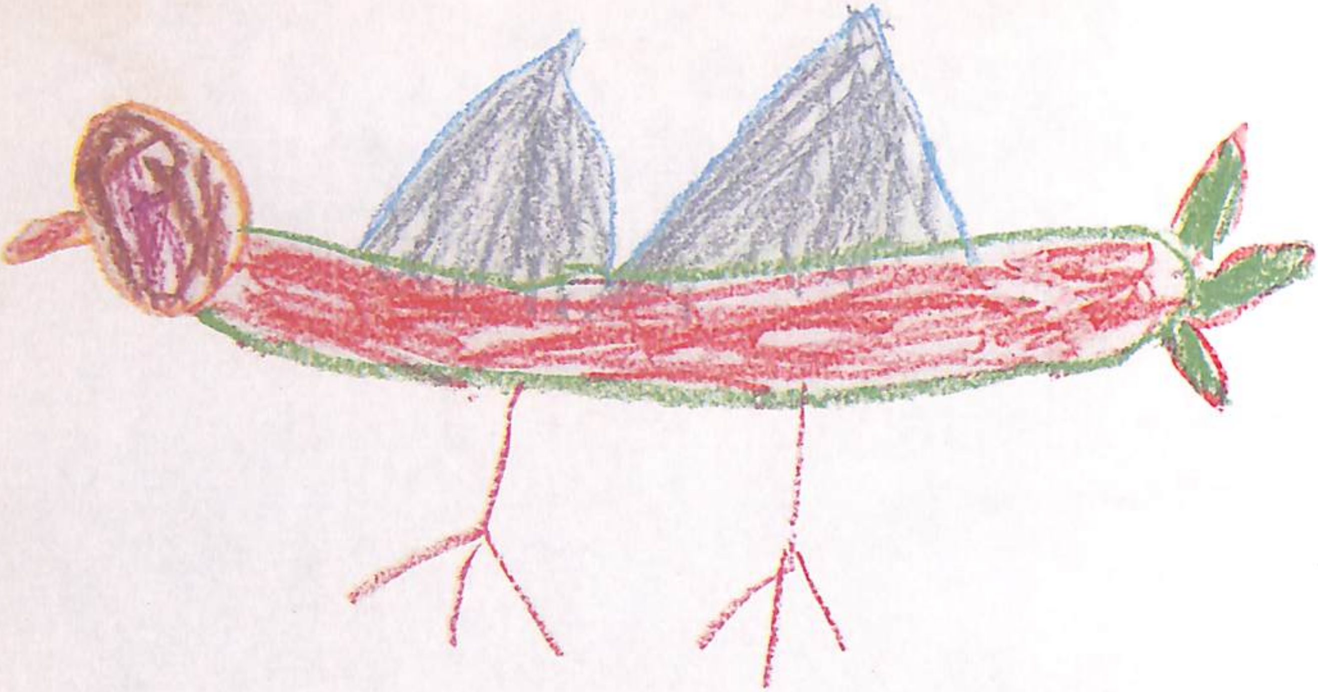
चकमक

दिसम्बर, 1999 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 10.00



झुण्ड में जीवन



किशनसिंह, छह वर्ष, टीकमगढ़, म.प्र.



संजय वर्मा, छह वर्ष, बैतूल, म.प्र.

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

दिसम्बर, 1999 के 171 वें अंक में



तुमने देखा होगा कि बहुत से जानवर झुण्ड में रहते हैं, साथ शिकार करते हैं और साथ-साथ जीते हैं। इस तरह से समूह में जीने के क्या फायदे हैं? क्या इसके कुछ नुकसान भी हो सकते हैं? ऐसी ही बहुत सी बातें पढ़ो इस अंक में। लेख है 'झुण्ड में रहने की लागत और लाभ'। पेज 6 पर।

एक छोटा–सा लड़का है सरस। सरस के पास एक कुत्ता है पुल्लू। पढ़ो सरस और पुल्लू की कहानी पेज 21 पर।



अगले साल के लिए तुम्हारे ही चित्रों से सजा सुन्दर-सा कैलेण्डर है इस अंक के बीच में। इसे अपने घर या स्कूल में लगा लो।



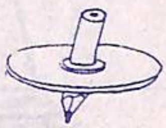
मनभावन कविताएँ

रोचक शृंखला

हर बार की तरह

मेरा पन्ना

और भी बहुत कुछ



आवरण : मछलियों का झुण्ड, साभार : अमेज़िंग एनिमल ग्रुप्स

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्‌देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

कहते हैं समय अपनी गति से बीतता रहता है। तो बीसवीं सदी को आख़िर बीतना था, सो बीत गई।

अब हम इक्कीसवीं सदी के द्वार पर जा पहुँचे हैं। चारों तरफ इस नई सदी का जैसा नशा-सा छाया है। आने वाले कुछ सालों तक इस नई सदी का बहुत हल्ला-गुल्ला रहेगा। लोग पता नहीं कितनी तरह से इसका स्वागत करेंगे, जश्न मनाएँगे।

सोचने की बात यह है कि नई सदी में दुनिया कैसी होगी? जहाँ हम रहते हैं उसमें क्या बदलाव होगा? हमारा समाज बदलेगा या नहीं? सब बच्चों को पढ़ने का मौका मिलेगा या नहीं? सबको खाना मिलेगा या नहीं? गरीबी, अशिक्षा, असमानता, शोषण ऐसी सब समस्याओं का अंत होगा या नहीं?

सच बात यह है कि यह सब एकदम से बदलने वाला भी नहीं है। हमें इस नई सदी में भी इन सब समस्याओं का सामना करना ही पड़ेगा। लेकिन एक नई तारीख़ से एक प्रण करने का मौका है। हम तय करें कि हम सब अपनी क्षमता भर इस परिस्थिति को बदलने की कोशिश करेंगे।

इसलिए . . . कि जो है उससे बेहतर चाहिए !

● चकमक

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-15 अंक-6 दिसम्बर, 1999

सम्पादन
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विस्वास

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

वितरण
कमल सिंह
मनोज निगम
अशोक रोकड़े

सहयोग
राकेश खत्री
सुशील शुक्ला

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा

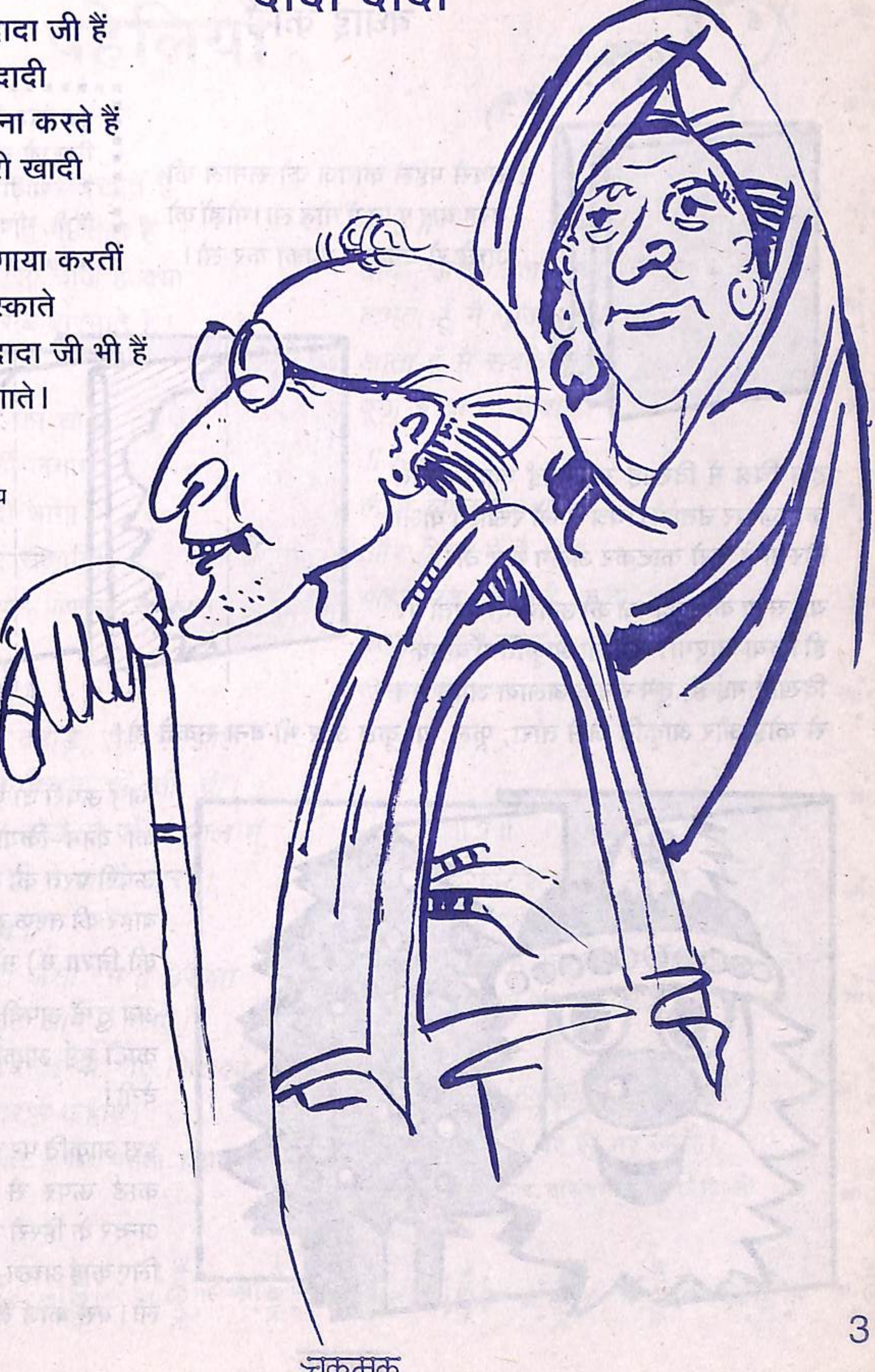
चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

दादा दादी

एक हमारे दादा जी हैं
एक हमारी दादी
दोनों ही पहना करते हैं
बिलकुल भूरी खादी

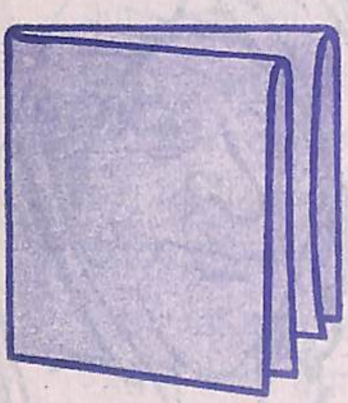
दादी गाना गाया करतीं
दादा जी मुस्काते
कभी कभी दादा जी भी हैं
कोई गाना गाते।

● डॉ. श्रीप्रसाद
● चित्र : धनंजय

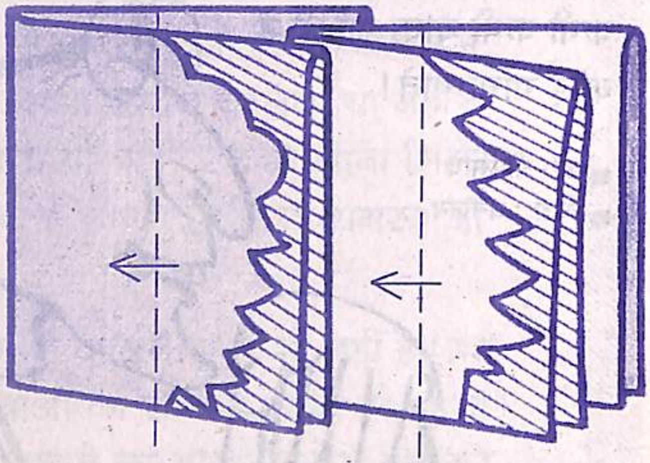


बधाई कार्ड

इस तरह के कार्ड बनाने के लिए जो सामग्री लगेगी, वो है – थोड़ा मोटा कागज़, कैंची, गोंद और रंग।



सबसे पहले कागज़ को रूमाल की तरह चार परत में मोड़ लो। मोड़ों को अच्छे से दबाकर पक्का कर लो।



इस चित्र में दिखाई गई कोई एक आकृति कागज़ पर उतारो। चित्र में जो रेखाओं वाला हिस्सा है उसे काटकर अलग कर दो।

यह सारा काम कागज़ की ऊपरी दो परतों पर ही किया जाएगा। यहाँ जो आकृतियाँ बनाकर दिखाई गई हैं, तुम उनके अलावा अपने मन से कोई और आकृति जैसे तारा, फूल. या कुछ और भी बना सकते हो।

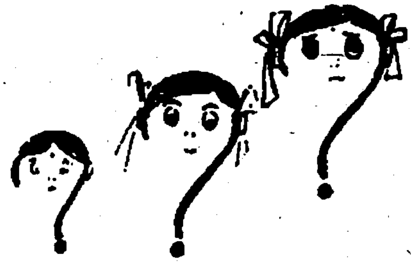


जिन ऊपरी दो परतों पर काटने का काम किया है, उनमें से ऊपरी परत को टूटी रेखा पर से बाहर की तरफ खोलते हुए (तीर की दिशा में) मोड़ लो।

अब तुम्हें अपनी बनाई, मतलब काटी हुई आकृति पूरी दिखाई देगी।

इस आकृति पर रंग भर लो। जब कार्ड ऊपर से सज जाए तो अन्दर के हिस्से में अपने मित्र के लिए कोई अच्छा-सा संदेश लिख लो। बस कार्ड तैयार है।

पहेलियाँ



॥ 1 ॥

बिना धोए सब खाते हैं
खाकर ही पछतांते हैं
बोलो ऐसी चीज़ है क्या
कहते सब शरमाते हैं।

॥ 2 ॥

कागज़ का घोड़ा
धागे की लगाम
छोड़ दो धागा
तो करे सलाम।

● हितेष व्यास, प्रतापगढ़, राजस्थान

॥ 3 ॥

एक दहाड़े, रौब भी झाड़े,
दूजा करता चीं, चीं, चीं।
जब धोखे से फँसा जाल में,
चीं चीं ने काटी रस्सी।

॥ 4 ॥

कैरी जैसा रंग है उसका
खट्टे आम न खाए।
हरी मिर्च भी भाए जिसको
गंगाराम कहाए।

● एम.एल. नागेश, केसला. होशंगाबाद, भोपाल

॥ 5 ॥

यदि मुझको उलटा कर देखो
लगता हूँ मैं नौजवान
आता हूँ मैं सबके काम
बूढ़ा बच्चा या जवान।

॥ 6 ॥

लाल-लाल डिब्बा
और डिब्बे में है छेद
बाहर बंद किया है ताला
बताओ मुझे जरा ये भेद।

● सुरेन्द्र कुमार वैष्णव, मकरेड़ा, अजमेर, राजस्थान

॥ 7 ॥

घेरदार है लहँगा उसका
एक टाँग से रहे खड़ी
करते हैं सब चाह उसी की
वर्षा हो या धूप कड़ी।

॥ 8 ॥

सभी पदार्थों को खा जाऊँ
पानी से पर मैं मर जाऊँ।

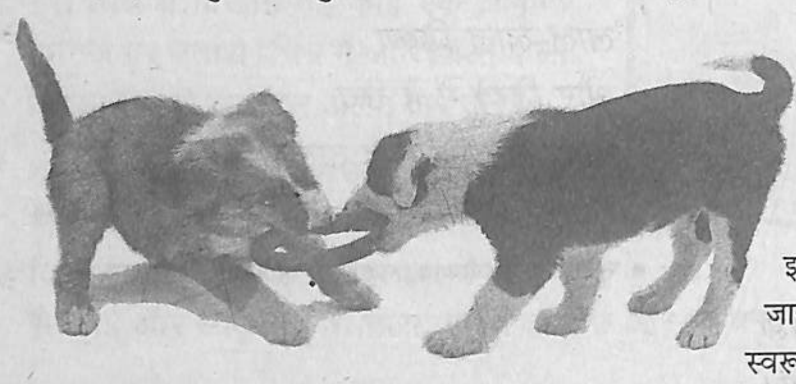
● निशा तँवर, नारायणा गाँव, नई दिल्ली

झुण्ड में रहने की लागत और लाभ

● हरिणी नगेन्द्र



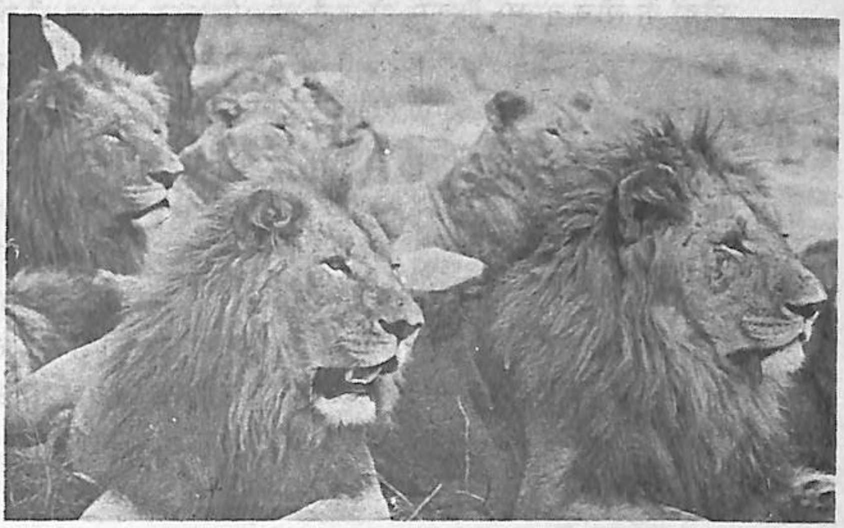
आम तौर पर हमें अपने आसपास कई जीव अकेले ही दिखाई पड़ते हैं, जैसे गिलहरियाँ, छिपकलियाँ, कुत्ते-बिल्ली आदि। पर कई जानवर समूहों या झुण्डों में रहना पसन्द करते हैं और शिकार जैसे कई महत्वपूर्ण काम भी झुण्ड में ही करते हैं। सड़क पर रहने वाले कुत्ते इसका एक बढ़िया उदाहरण हैं। तुमने ऐसे कुत्तों के किसी झुण्ड को गलती से 'उनकी सड़क' में घुस आए किसी नए कुत्ते को भगाते हुए तो देखा ही होगा। कुत्तों की तुलना में बिल्लियाँ अकेले रहना, अपनी लड़ाइयाँ अकेले ही निपटाना, ज़्यादा पसन्द करती हैं। दूसरी ओर दीमक जैसे जीव हैं। तुमने इनकी बाम्बियाँ भी कभी न कभी देखी होंगी। इनमें सैकड़ों-हज़ारों दीमक एक साथ एक सामाजिक इकाई की तरह रहते हैं। यानी, जानवरों की दुनिया में समाज का स्वरूप बहुत ही अलग-अलग तरह का हो सकता है। बिल्कुल अकेले रहने वालों से लेकर, बीच की सभी संख्याओं से होते हुए, हज़ारों की संख्या में साथ रहने वाले हो सकते हैं इनके समाज।



क्या तुमने कभी सोचा है कि किसी प्रजाति का जानवर किसी खास संख्या का ही समूह क्यों बनाता है? शायद यह सवाल तुम्हें कुछ मुश्किल और पेचीदा लगे, पर इसके पीछे की असली बात और भी पेचीदा है। ऐसा नहीं कि एक प्रजाति के सभी जानवर कोई एक ही नियम का पालन करते हों। उनमें भी काफी भिन्नताएँ हो सकती हैं। उदाहरण के लिए हाथी को ही देखो। इनके झुण्डों में कभी दस-बीस ही सदस्य होते हैं तो कभी सौ-सौ। दूसरी ओर, कई बार जंगलों में नर हाथी अकेले घूमते हुए और अकेले जीते भी मिल जाते हैं। यानी अब एक और सवाल। कि किसी प्रजाति के आम नियम से अलग रास्ता अपनाने का फैसला कोई सदस्य कैसे करता है? किन बातों के आधार पर तय होती हैं ऐसी चीज़ें?

चलो अब एक और बात पर गौर करते हैं। कई जीव अपने जीवनकाल में अलग-अलग समय पर अलग-अलग तरह से जीते हैं। कभी झुण्ड में तो कभी अकेले। नर बब्बर शेर को ही लो। बचपन में वह अपने माँ-बाप के झुण्ड का हिस्सा होता है। पर जब वह बड़ा होने लगता है, जवान होने लगता है तो उसे झुण्ड से भगा दिया जाता है। तब वह कुछ समय अकेले ही जीता है। फिर

किसी झुण्ड का हिस्सा बनने के लिए उसे उस झुण्ड के मौजूदा नेता या अगुआ बब्बर शेर को हराकर या मारकर अपनी ताकत साबित करनी पड़ती है। अगर वह ऐसा कर पाए तो वह फिर से झुण्ड में सामाजिक जीवन जीने लगता है। वर्ना अकेले ही सही।



तो मूल सवाल क्या है? यही न, कि किसी भी समय पर कौन-सी बातें किसी जानवर से यह तय करवाती हैं कि वह अकेले रहे, या समूह में? ज़ाहिर है कि हर समय पर वह जीव वही चुनेगा जो उसके लिए सबसे अच्छा हो। यह हम तब समझ सकते हैं जब हम ऐसी स्थितियों के लाभ-लागत का विश्लेषण करें। यानी यह देखें कि इन स्थितियों में उस जीव को क्या कीमत चुकानी पड़ रही है और उसे इसके बदले में क्या लाभ मिल रहे हैं।

यूँ तो इस तरह की भाषा और शब्दों का उपयोग दफ्तर चलाने वाले लोग करते हैं। पर इस तरह से हम जानवरों के द्वारा अपनाई जाने वाली रणनीतियों को भी समझ सकते हैं। इसका मतलब बड़ा सीधा-सा है। पहले देखते हैं कि झुण्ड में रहने से किसी जानवर को किस तरह की कीमत चुकानी पड़ती है। जैसे उसे शायद अपना खाना झुण्ड के सभी सदस्यों के साथ बाँटना पड़ता हो। यह तो काफी बड़ी कीमत है। लेकिन दूसरी ओर हो सकता है कि इसके बहुत से फायदे भी हों। जैसे जब वह बीमार हो या शिकार पर गया या गई हो, तब उसके झुण्ड के दूसरे जानवर उसके बच्चों का ध्यान रख सकते हैं। ऐसे में अगर कीमत (लागत) की तुलना में फायदे ज़्यादा हों तो जानवर ज़रूर ही झुण्ड में रहना पसन्द करेंगे। लेकिन अगर लागत ज़्यादा हो तो कोई भी जानवर अकेला ही रहेगा।



तो चलो, हम समूह या झुण्ड में रहने के लाभ और लागत पर चर्चा करते हैं। इन लाभ या लागतों को समझने के लिए कुछ जानवरों के उदाहरण भी देखते हैं।

झुण्ड में रहने के लाभ

शिकार का डर कम

कल्पना करो कि तुम सौ कीड़ों के एक झुण्ड में उड़ रहे हो। अब अगर इस झुण्ड पर एक चिड़िया ने धावा बोला, तो सभी

कीड़ों के बीच तुम्हारे शिकार हो जाने की सम्भावना 1/100 ही होगी, है न। इसमें हमने यह मान लिया है कि चिड़िया कीड़ों के प्रति अपनी कोई पसन्द या नापसन्द नहीं बरतेगी। सभी को बराबरी से निशाना बना सकती है वह। लेकिन अगर तुम अकेले होते तो एक सम्भावना यह बनती कि तुम्हारी ओर उस चिड़िया का ध्यान ही न जाता। पर अगर उसने एक बार तुम्हें देख लिया होता, तब तो तुम्हारी खैर नहीं थी। क्योंकि तब उस चिड़िया का ध्यान बँटाने के लिए आसपास और कोई कीड़े नहीं होते। झुण्ड बनाने के पीछे यह एक काफी महत्वपूर्ण कारण होता है। लेकिन इस कारण को भी हम बहुत दूर तक खींच नहीं सकते। जैसे, इस तर्क के अनुसार झुण्ड बनाते-बनाते अगर हम एक बहुत ही बड़ा झुण्ड बना लें, लगभग हज़ार कीड़ों का, तो सोचो क्या होगा? हो सकता है कि उस पूरे इलाके के सभी पक्षी सिर्फ तुम्हारे झुण्ड के प्रति ही आकर्षित हों। तब भी मुश्किल। यानी, किसी समूह का सदस्य बना जाए या अकेले ही रहा जाए, यह तय करने में उस झुण्ड के आकार का भी बहुत हाथ होता है।

सतर्क रहने की बेहतर क्षमता

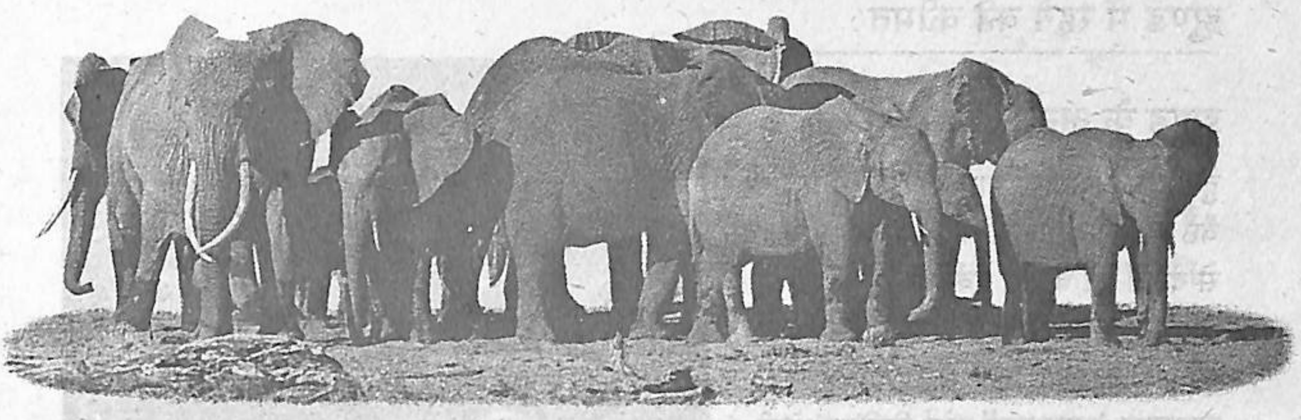
दो आँखें एक से बेहतर होती हैं, और बीस आँखें दो से बेहतर! अगर जंगल में हिरण झुण्ड में घास चर रहे हों तो वे अपनी सामूहिक कोशिशों से शेर के आने के बारे में ज़्यादा सचेत रह सकते हैं। जितने ज़्यादा हिरण होंगे उतनी ही दिशाओं में शेर का ध्यान रखा जा सकेगा। ऐसे में एक फायदा और भी है। अगर शेर झुण्ड पर हमला कर भी दे तो हिरण अपने साथियों की हलचल से खतरे को भाँपकर अपनी जान बचा सकते हैं। दूसरी ओर, अगर हिरण अकेला ही चर रहा हो तो शेर दबे पाँव पीछे से आकर शिकार कर सकता है।



सामूहिक लड़ाई

झुण्ड में रहने वाले जानवरों के लिए शिकारी से लड़कर अपने को बचाने की गुंजाइश ज़्यादा रहती है। कनाडा और ग्रीनलैंड के ठण्डे बर्फीले इलाकों में रहने वाले कस्तूरी बैल अक्सर अपना बचाव इसी तरह करते हैं। इनके सींग बहुत धारदार होते हैं। जब इन्हें कोई भेड़िया नज़र आता है तो वे अपना सिर बाहर की तरफ करके एक कसा हुआ घेरा बना लेते हैं। अब अगर भेड़िया हमला करे, तो उसे बैलों के तीखे सींगों के वार सहने पड़ेंगे। लेकिन अगर कोई कस्तूरी बैल अकेला हो तो यह तय है कि भेड़िया पैंतरे बदलकर हमला करेगा और उसे मार डालेगा।

झुण्ड में रहने से पूरे झुण्ड को ही सुरक्षा मिल जाती है।



खाना मिलने की ज़्यादा सम्भावना

भारतीय जंगली कुत्ते, जिन्हें ढोल कहा जाता है, आम तौर पर झुण्ड में ही शिकार करते हैं। उनका झुण्ड एक बड़े आकार के हिरण को भी मार सकता है, जो उनके लिए कई दिनों के खाने का स्रोत होगा। जबकि एक अकेला ढोल ऐसा कर पाने का सोच भी नहीं सकता। फिर झुण्ड में रहने से बूढ़े परन्तु समझदार और जानकार सदस्यों का भी साथ मिलता है। इससे भी खाना जुटाने में मदद मिलती है। जैसे, सूखा या अकाल पड़ने पर हाथियों के कई छोटे-छोटे समूह मिलकर एक बड़ा झुण्ड बना लेते हैं। इसका मुख्य कारण कुछ झुण्डों में बड़ी-बूढ़ी जानकार हथिनियों का होना है जिन्हें पहले के सूखे का अनुभव होता है। जिन्हें मालूम होता है कि सूखा पड़ने पर भी कहाँ-कहाँ पानी मिल सकता है। ऐसी एक हथिनी हाथियों को भोजन और पानी तक जाने का रास्ता बता सकती है और कई झुण्डों को तबाह हो जाने से बचा सकती है।

चलने-फिरने में ऊर्जा का खर्च कम

सुनने में शायद यह कुछ अजीब लगे पर चलो देखें कि यहाँ बात क्या कही जा रही है। तुमने मछलियों को पानी में तैरते तो देखा ही होगा। नदी-पोखर-तालाब या फिर मछलीघर या एक्वेरियम में। मछलियों का अध्ययन करने वाले लोग बताते हैं कि अक्सर ऐसा लगता है कि झुण्डों में तैर रही मछलियाँ अकेले तैर रही मछली की तुलना में उतने ही समय में ज़्यादा दूरी तय कर पाती हैं। यह शायद इसलिए हो कि जब कोई मछली तैरती है तो उसके तैरने की क्रिया से उसके पीछे, थोड़ा आजू-बाजू, पानी में एक किस्म के घूर्णन या चक्कर बन जाते हैं। कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि इस मछली के पीछे अगर कोई मछली उसके थोड़ा बाएँ या दाएँ तैरे तो वह इन चक्करों के कारण कम ऊर्जा खर्च करके उतनी ही तेज़ी से तैर सकती है। लेकिन कुछ और वैज्ञानिक यह भी कहते हैं कि यह बात पूरी तरह से साबित नहीं हुई है।

शायद यही बात हंस, बगुले आदि कुछ पक्षियों पर भी लागू होती होगी जब वे उड़ रहे होते हैं। शायद इसीलिए लम्बी उड़ान भरने वाले कई पक्षी आपस में **V** आकार बनाकर उड़ते हैं। कुछ लोग यह भी बताते हैं कि सबसे आगे उड़ने के लिए वे बारी-बारी से एक-एक को चुनते हैं ताकि एक ही पक्षी को थकना न पड़े। पर अभी यह बात सिर्फ एक सम्भावना है। इसके कोई ठोस सबूत सामने नहीं आए हैं।

झुण्ड में रहने की कीमत



झुण्ड के अन्दर ही शिकार

तुमने कई किताबों या कैलेण्डरों में पेड़ पर बैठे कई सारे पक्षियों के चित्र देखे होंगे। दूर से देखने पर वे सब एक भरे-पूरे सुखी परिवार के सदस्य जैसे लगते हैं। पर पास से जानो तो बात इतनी सरल नहीं होती। दरअसल, अगर इनमें कोई चिड़िया थोड़ी देर के लिए भी अपना घोंसला अकेला छोड़कर कहीं जाए तो लौटने पर हो सकता है उसे उसके अण्डे या चूज़े नहीं मिलें। हो सकता है कि उन्हें पड़ोस की किसी चिड़िया ने चट कर दिया हो।

झुण्ड के कुछ जानवरों की दादागिरी सहना

मान लो तुम किसी ऐसे जानवरों के झुण्ड के सदस्य हो जिनमें कुछ दादा किस्म के जानवर भी हैं। तब तो तुम्हें यह भी सहना पड़ेगा कि तुम्हारी तुलना में उन्हें ज़्यादा खाना, मादाओं के साथ रहने की ज़्यादा छूट आदि मिलेगी। ऐसे झुण्डों में इन दादा जानवरों को सभी तरह की सुविधाओं का उपयोग करने के ज़्यादा अधिकार मिलते हैं। और बाकी जानवरों को कुछ नुकसान उठाना पड़ता है।

उदाहरण के लिए बबून नामक वानर प्रजाति को ही लो। इनके झुण्डों में जो प्रभावशाली नर होते हैं उन्हें वैज्ञानिक अल्फा नर कहते हैं। इन झुण्डों में अल्फा नर को भोजन और बाकी सारी सुविधाओं का सबसे अच्छा हिस्सा दिया जाता है जबकि दूसरे जूनियर नरों को सबसे बुरे हिस्से। ऐसे में कई बार जूनियर नर झुण्ड से अलग होकर अपना ही छोटा-सा झुण्ड बनाना या अकेले ही जीना पसन्द करते हैं। अकेले जीने पर शायद उन्हें खाना कम मिले, पर कम से कम उस पर उनका पूरा अधिकार तो होता है।

बीमारियों का फैलना



अगर किसी झुण्ड में एक जानवर बीमार पड़ जाए तो वही बीमारी झुण्ड के दूसरे जानवरों को लगने का डर भी रहता है। क्योंकि ये जानवर आपस में बहुत घुल-मिलकर जीते हैं। खासकर साँस, चमड़ी आदि की बीमारियों में यह खतरा और बढ़ जाता है।

इसकी तुलना में अकेले जीने वाले जानवरों को संक्रामक रोगों की चपेट में आने का खतरा कम रहता है।

कुल मिलाकर

ये कुछ ऐसी कीमत और फायदे हैं जो समूह या झुण्ड में रहने वाले जानवरों पर लागू होते हैं। ये और ऐसे ही अन्य कारण झुण्ड बनाने और झुण्ड के आकार तय करने में अपनी भूमिका निभाते हैं। ऐसे ही लाभों और कीमत के आधार पर जानवर समूह में रहने या अकेले रहने में से वह रणनीति अपनाते हैं जो उनके लिए सबसे बेहतर हो। ऐसी रणनीतियाँ जो लाभों को तो बढ़ाएँ पर लागतों को कम से कम ही रखें।

क्या तुम भी इसी तरह के कुछ और फायदों या कीमत के बारे में सोच सकते हो? अगली बार जब तुम जानवरों के किसी झुण्ड को देखो, तो ध्यान से उनकी हरकतों को देखना। ये जानवर बन्दर, लंगूर, कुत्ते, तोते, कबूतर, कीड़े-मकोड़े, इल्लियाँ, गिंजाई, आदि कुछ भी हो सकते हैं। देखना कि क्या वे कभी आपस में लड़ते हैं? अपना खाना आदि आपस में कैसे बाँटते हैं? क्या वे कभी बच्चों की देखभाल करने जैसी ज़िम्मेदारियाँ भी बाँटते हैं? फिर इसके आधार पर पता लगाने की कोशिश करना कि अलग-अलग परिस्थितियों में इन जानवरों के लिए झुण्ड में रहने की क्या कीमत होगी और क्या फायदे। अलग-अलग परिस्थितियाँ मतलब कि अगर जानवर नर हो तो क्या होगा और मादा हो तो? दादा किस्म का हो तो क्या होगा और दब्बू किस्म का हो तो? जवान हो तो क्या होगा और बूढ़ा हो तो? क्या इन विभिन्न परिस्थितियों में जानवरों द्वारा चुने जाने वाले विकल्प अलग होंगे?

इन सवालों के एकदम सही-सही जवाब ढूँढना तो शायद असम्भव है। आखिर जानवर के दिमाग में क्या चल रहा है, यह तो हम नहीं पढ़ सकते हैं न। न ही हम खुद कुत्ता या तोता या गिंजाई बन सकते हैं। फिर भी कोशिश करो कि उस नतीजे तक पहुँच सको, जो सबसे ज़्यादा तार्किक लगता हो। वह शायद असलियत के भी बहुत करीब होगा।

● मूल अंग्रेजी लेख की लेखिका हरिणी नगेन्द्र बैंगलोर के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस के सेंटर फॉर इकोलॉजीकल स्टडीज़ में शोधरत हैं।अनुवाद : टुलटुल विश्वास।

इस लेख के लिए चित्र इन किताबों से साभार लिए गए हैं – नैशनल ज्योग्राफिक सोसायटी की अमेज़िग एनिमल ग्रुप्स व हाउ एनिमल्स बिहेव; आइविटनेस गाइड्स की एलीफेंट व मैमल्स; दि न्यू लारूस एन्सायक्लोपीडिया ऑफ एनिमल लाइफ एवं चाइल्डक्राफ्ट सीरीज़ की एबाउट एनिमल्स।

माथापच्ची के हल नवम्बर माह के

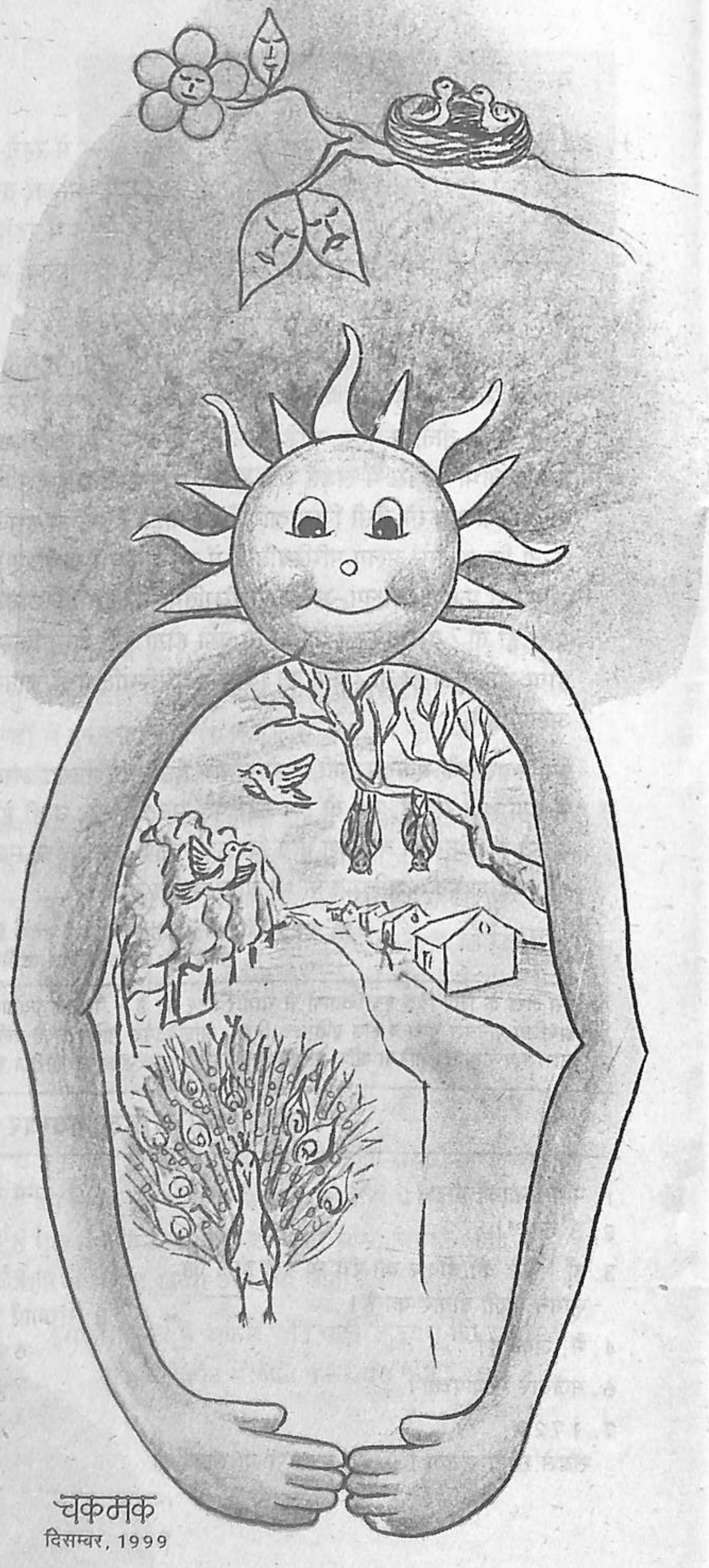
1. पाँच रेखाओं द्वारा।
2. 3 नम्बर।
3. हाँ! पीछे की दीवार का रंग भी वही होगा जो सामने वाली दीवार का है।
4. मैं, अकेला।
6. मज़ेदार माथापच्ची।
7. 1729
सबसे छोटी संख्या जिसे दो तरह से दो संख्याओं के घनों के योग के रूप में लिख सकते हैं।
$10^3 + 9^3 = 1729$
$12^3 + 1^3 = 1729$
8. संख्याएँ ये हैं –
695
782
431
9. 12 व्यक्ति।

सूरज का गोला

सूरज का गोला
इसके पहले ही कि निकलता
चुपके-से बोला
हमसे तुमसे इससे उससे
कितनी चीज़ों से
चिड़ियों से पत्तों से
फूलों-फल से, बीजों से
'मेरे साथ-साथ सब निकलो
घने अंधेरे से
कब जागोगे अगर न जागे,
मेरे टेरे से?'
आगे बढ़कर आसमान ने
अपना पट खोला
इसके पहले ही कि निकलता
सूरज का गोला।

फिर तो जाने कितनी बातें हुईं
कौन गिन सके इतनी बातें हुईं
पंछी चहके कलियाँ चटकीं
डाल-डाल चमगादड़ लटकीं
गाँव-गली में शोर मच गया
जंगल-जंगल मोर नच गया।
जितनी फैली खुशियाँ
उससे किरनें ज्यादा फैलीं,
ज्यादा रंग घोला।
और उभरकर ऊपर आया
सूरज का गोला,
सबने उसकी अगवानी में
अपना पट खोला।

● भवानीप्रसाद मिश्र
● चित्र : आशुतोष भारद्वाज





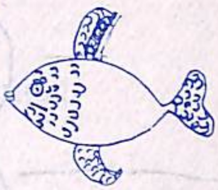
चाय का शौकीन नेवला

वैसे तो साँप और नेवले की लड़ाई में नेवला जीतता है, लेकिन चाय और नेवले की लड़ाई में गिलास टूटता है। मेरे घर में नेवले महाशय सपरिवार निवास करते हैं और उनका पसंदीदा पेय है – 'चाय'। हो सकता है कि नेवले को दिल की बीमारी हो, और उसके फैमिली डॉक्टर ने उसे चाय पीने की सलाह दी हो।







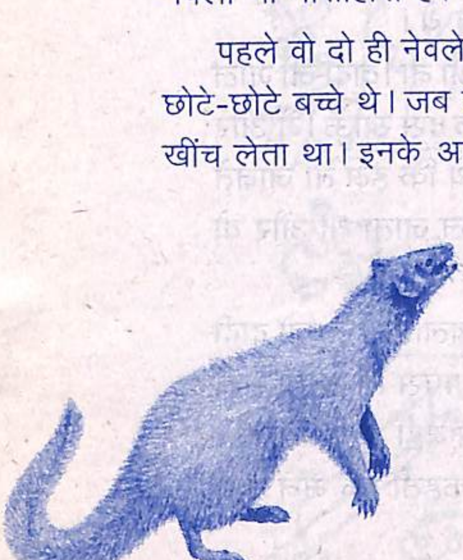




वैसे मुझे इन नेवलों से विशेष लगाव नहीं है, क्योंकि मेरे 'पशु-पक्षी पालो' कार्यक्रम में इन्होंने सदा विघ्न डाला है। एक तोते की टाँग खींचकर उसे लंगड़ा बना डाला। चूजों का तो सफाया ही कर दिया। मुर्गे-मुर्गियाँ भी चट कर गए। एक बार तो इनकी हिम्मत इतनी बढ़ गई कि एक्वेरियम में से मछली उठाकर ले गए। वैसे बिल्लियाँ भी कुछ कम नहीं हैं। उन्होंने भी कबूतरों, मुर्गों और खरगोशों को खूब सताया है।

जब हम चाय पीते हैं तो कप की तली में एक घूँट चाय तो बच ही जाती है। इसी बची हुई चाय को पीने के लिए नेवले जूठे रखे बर्तनों के आसपास घूमा करते हैं। ताकि चाय के साथ-साथ पेट-पूजा के लिए कुछ और भी मिल जाए। और उसी वक्त अगर कोई वहाँ आ जाता है तो बर्तनों के बीच दौड़ लगाते हुए भागते हैं। जिससे काँच या चीनी मिट्टी के पात्र टूट जाते हैं। नेवले की शक्ल मुझे ऊदबिलाव से मिलती-जुलती लगती है। जैसे किसी ऊदबिलाव का छोटा-सा बच्चा हो। नेवले को सचमुच का ऊदबिलाव बनने के लिए एक चपटी पूँछ और झिल्लीदार पंजों की आवश्यकता है। ऊदबिलाव की तरह नेवला भी माँसाहारी है।

पहले वो दो ही नेवले थे लेकिन अब इनकी जनसंख्या में वृद्धि हो गई है। उनके दो छोटे-छोटे बच्चे थे। जब पाइप में से एक बच्चा नहीं चढ़ पाता था तो दूसरा उसे ऊपर खींच लेता था। इनके आने-जाने के भी कई रास्ते हैं – नालियाँ, पाइप, खिड़की और दरवाज़े के बीच में छूटी हुई जगह।



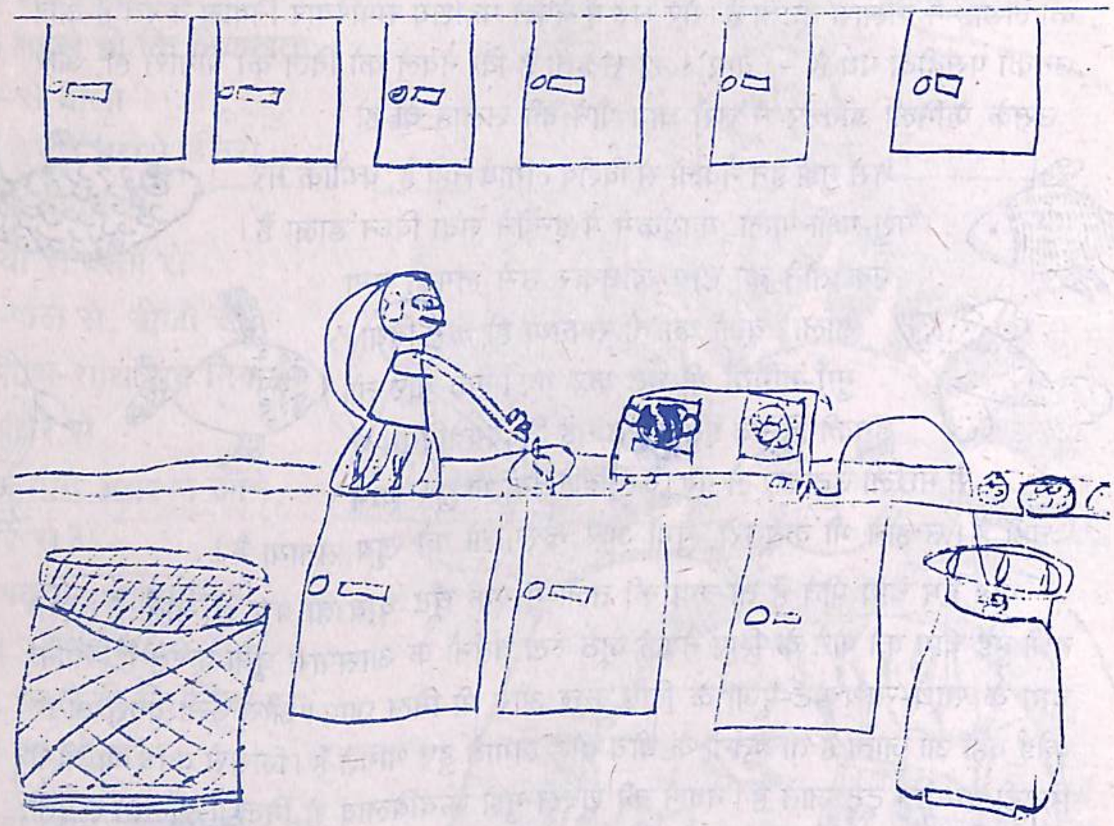
जब दो नेवले लड़ते हैं; तो ज़ोर से खिच-खिच चीं-चीं की आवाज़ करते हैं। एक बार एक नेवला रजाईयाँ रखने के बड़े संदूक में घुसकर मर गया था। कभी-कभी नेवलों से नाराज होकर मैं उनकी पिटाई का मौका भी नहीं जाने देती।

इतिश्री अहिरिपु कथा।

● पारुल बत्रा, 14 वर्ष, टीकमगढ़, म.प्र.

● मछली के चित्र : नेहा वानखेड़े, गोपाल, राधा केवट, अनूप श्रीवास्तव

बुढ़ढी दादी



हमारे पापाजी की एक बुआजी थीं। कभी-कभी वो हमारे घर आती थीं और तीन-चार महीने रहतीं थीं। हम लोग उन्हें दादी कहते थे।

एक दिन मैंने उनसे कहा दादी जी गोल-गप्पे बनाओ ना। दादी जी गोल गप्पे बनातीं पर सिर्फ चार देतीं थीं। मेरा मन करता कि दस खाऊँ। मैं और तारा चुपके-चुपके खाते थे। दादी जी पूछतीं तो कहते थे कि हम तो जानते ही नहीं कि किस डिब्बे में हैं। पर दादी जी को पता चल जाता था और वो डाँटती थीं।

अब दादी जी नहीं हैं। अब मुझे कौन गोल-गप्पे खिलाएगा? मुझे दादी जी की याद आती है पर क्या करूँ। जानेवाला कभी वापस तो आता नहीं है। एक बात और भी है। दादी जी बिना नहाए किचन में नहीं आने देतीं थीं। मेरी मम्मी हाथ-पैर धोकर कपड़ा बदल लेतीं और कहतीं कि मैंने नहा लिया।

● चित्र और कहानी : कृष्णा कुमार, 10 वर्ष, फैज़ाबाद, उ. प्र.



शिकायत

मेरी पाठशाला का नाम माध्यमिक शाला, खर्रा है। मैं कक्षा सातवीं का विद्यार्थी हूँ। मेरी शाला में चार शिक्षक हैं जिसमें से दो शिक्षक शराब पीते हैं। वे कभी-कभी शराब पीकर शाला आ जाते हैं। कक्षा में पढ़ाते नहीं बल्कि गप्प सड़ाका करते हैं। एक बार हम बच्चों ने शाला नायक से उन शिक्षकों की शिकायत की। शाला नायक ने कहा हम उनकी शिकायत बी.डी.ओ. साहब से करेंगे। दस पन्द्रह लड़के शिकायत करने के लिए बस से विकास खंड मुख्यालय परसवाड़ा गए।

बी.डी.ओ.आफिस में बी.डी.ओ के कमरे में गए। वहाँ उन शिक्षकों की शिकायत लिखित रूप में की।

शाला नायक ने मौखिक बी.डी.ओ. साहब से कहा कि इन शिक्षकों का ट्रांसफर कर दो और हमारी शाला में दूसरे शिक्षक भिजवाओ। तब बी.डी.ओ. साहब ने जवाब दिया, ''क्या शिक्षक मेरी अलमारी में बंद हैं जो निकालकर तुम्हें दे दूँ।'' बी.डी.ओ. साहब का जवाब सुनकर हम सभी चुप हो गए और शाम वाली बस से अपने गाँव लौट आए।

● सोनल राज वानखेड़े, सातवीं, खर्रा, बालाघाट, म.प्र.



● अनिल भट्ट, रामपुरा, म. प्र.



मेरा प्यारा मिट्ठू



मेरा मिट्ठू बहुत अच्छा है वह मेरा नाम भी लेता है। जब मेरे पापा मुझे बुलाते हैं– 'गोकुल इधर आना' तो मेरा मिट्ठू भी बोलता 'गोकुल इधर आना तो।' वो सबका नाम लेता है। मेरे पापा को 'पापा' बोलता है, मम्मी को 'मम्मीजी' और मेरे भैया को 'किशोर' बोलता है। जब भूख लगती है तो वह मुझे बोलता है 'भूख लगी खाना दे जल्दी।'

थोड़े दिन पहले मेरे प्यारे तोते के सिर के बाल गिरने लगे थे। फिर मेरे पापा इन्दौर से एक तोता और लेके आ गए। और साथ में दवाई भी लाए और थोड़े दिन बाद नए बाल आ गए। फिर दोनों तोते ठीक थे। हम उनके साथ खेलते थे। मैं रोज उन्हें दाना डालने लगा।

एक दिन रात में, मैं और मेरे तोते सो रहे थे। घर में सभी सोए हुए थे। मैंने तोते के घर को स्टूल पर रखा था। एकदम अचानक मेरे तोते चीखने लगे। मेरी नींद खुली और मैंने देखा कि एक चूहा उनके घर के अन्दर आ गया था। फिर मैंने चूहे को भगा दिया और उनके घर मेरे पास रखकर मैं सो गया, सुबह मेरे पहले वाले तोते ने मुझे मेरा नाम लेकर जगाया। फिर मैंने तोते को दाना दिया।

● चित्र और कहानी : गोकुलसिंह पंवार, दसवीं, देवास, म.प्र.



तोता उड़ा दिया

मेरे पापा एक तोता खरीदकर लाए। हम सब खूब खुश हुए। मैंने जिद करके पापा से पिंजरा भी मँगाया। पिंजरे में तोते को रखकर खूब खाने को दे दिया। पर तोते को अपनी मम्मी याद आती होगी।

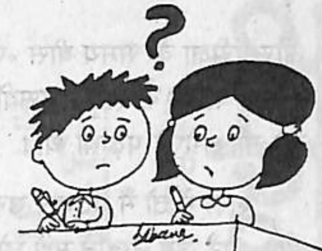
एक दिन शैतानी करने पर, मम्मी ने मुझे एक कमरे में, एक घण्टे के लिए बंद कर दिया और पानी और मिक्चर जो मेरी पसंद की चीज़ है रख दिया। जब एक घण्टे बाद मम्मी ने दरवाजा खोला तो मुझे तोते को पिंजरे में बंद देखकर ऐसा लगा, जैसे वह भी कमरे में बंद है। ऐसा सोचकर मैं बाहर आकर रो-रोकर तोते को बाहर रखो, ऐसे बोलने लगा। मेरे रोने से मम्मी ने परेशान होकर तोते को बाहर निकाल दिया, और मैंने उसे उड़ा दिया।

● राय सिंग भाटमा वसावे, चिमलखेड़ी, महाराष्ट्र

● आयुष शर्मा, पोड, पाण्डुका

हमारे शिक्षक : 15

अब तक इस शृंखला में कई लोगों ने अपने स्कूली जीवन और शिक्षकों की बातें लिखीं। तुम्हें यह शृंखला कैसी लग रही है? क्या तुम इसके बारे में कोई सुझाव देना चाहोगे? हम तुम्हारे पत्रों का इन्तज़ार कर रहे हैं। और हाँ इसके साथ ही तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे में याद करके कुछ लिखें।



मेरी माँ, मेरी शिक्षक

मेरी माँ एक अच्छी शिक्षिका थी। नहीं, आज भी है। बीस साल की उम्र से उसने स्कूल में पढ़ाना शुरू किया था। ये 1950 की बात है। तब से लेकर आज तक वह पढ़ा रही है। आज वह करीब 70 साल की है।

मेरी माँ से मुझे बहुत कुछ मिला। पर उसकी दो बातों ने मुझ पर पक्की छाप छोड़ी है – एक उसकी हिम्मत (अन्याय करने वाले पुरुषों और गरीबी से लड़ने की), और दूसरी बच्चों व बड़ों को पढ़ाने की क्षमता। यहाँ मैं उसके शिक्षिका होने के बारे में बात करूँगी, क्योंकि उससे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है।



आज मैं या मेरे साथी जिस तरह से बच्चों के साथ खेलते हैं, मज़ाक करते हैं, उन्हें अपने ऊपर औंधे पड़ने देते हैं, यह सब उस समय नहीं चलता था। हालाँकि मेरी माँ भी बच्चों को बेहद प्यार करती थी। परन्तु वह उनसे हमेशा एक हाथ की दूरी रखती थी। केवल एक या दो ही बच्चे ऐसे थे जिन्हें वह कभी-कभार पास बुलाकर चूमती थी। बाकी, वह अनुशासन में बहुत विश्वास रखती थी। कहती थी, ''..... नहीं तो बच्चे टीचर का आदर नहीं करेंगे।''

माँ एक प्रायवेट अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल में पढ़ाती थी। वहाँ एक कक्षा में 35 से 40 बच्चे रहते थे। वह हमेशा पहली कक्षा पढ़ाना पसन्द करती थी, क्योंकि उसे बच्चों की ज़िन्दगी की नींव डालना अच्छा लगता था। कई साल बाद भी बहुत सारे लड़के-लड़कियाँ, जिनकी उम्र अब 25–30 साल की हो गई थी, उनसे मिलने आते थे। वे याद करते थे कि बचपन में उन्हें एक अच्छी टीचर मिली थी।

हम पाँच भाई-बहनों को माँ ने बड़े कष्टों से पाला था। वह पिताजी की क्रूरता से सदा हमको बचाने की कोशिश में लगी रहती थी। लगभग चार-पाँच साल के लिए माँ और पिताजी अलग हो गए थे। तब माँ ने हम पाँचों को अपने वेतन पर सम्भाला, पढ़ाया। यह 1965 की बात है। तब मैं छठवीं में थी। मैं ग्यारह साल की थी। माँ स्कूल से लौटने के बाद ट्यूशन पढ़ाती थी। कोई आठ-दस बच्चे,

और परीक्षा के समय बीस -पच्चीस बच्चे पढ़ने आते थे। ये सब पहली से लेकर दसवीं तक के होते थे। उन सभी को माँ अंग्रेज़ी पढ़ाती थी।

शुरू में तो मैं बैठकर उनको देखती रहती थी। फिर धीरे-धीरे जब उन्होंने मुझे छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाने का काम दिया तो मेरा दिल खुश हो गया। शायद इसलिए कि मैं माँ का हाथ बँटा सकी थी। फिर मेरी पढ़ाने में रुचि भी थी।

माँ हमको रोज़ स्कूल की बातें सुनाती थी। उनकी कक्षा में, पहली में, अशोक नाम का एक लड़का था। उसको पढ़ना पसंद था, पर लिखना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। पर माँ तो हर बच्चे से खूब लिखवाती थी। तो अशोक हाथ आगे करके बड़े करुण स्वर में कहता था, ''मैडम, आप मुझे मारिए। मगर मुझसे लिखने को मत कहिए।'' और माँ हँसकर रह जाती थी।

पढ़ाई खत्म होने के बाद बच्चे माँ को घर की बातें सुनाते थे। कभी घर में खाना क्या बना, तो कभी माँ-पिताजी में किस बात पर झगड़ा हुआ। दीपावली पर हमारे घर में मिठाई के डिब्बों का ढेर लग जाता था। हम पाँचों बच्चे दिन भर खा-खाकर छक जाते थे। फिर पड़ोसियों में भी बाँट देते थे। इस प्रकार का माहौल था घर में।

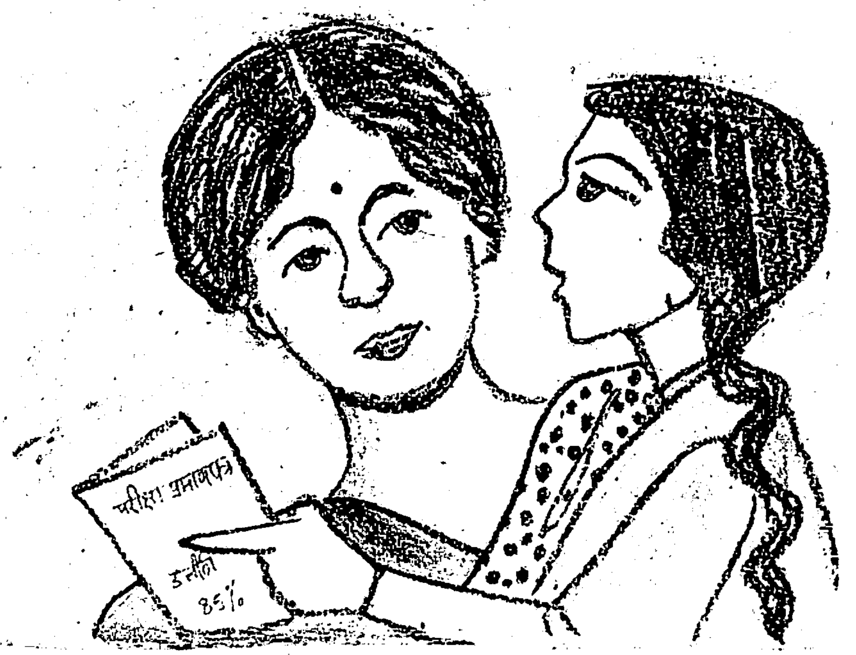
माँ हम पाँचों की पढ़ाई भी बड़े ध्यान से देखती थी। मेरी बड़ी बहन एक साल छठवीं में गणित में फेल हो गई। केवल 6 अंक मिले 100 में से। माँ के गुस्से की कोई सीमा नहीं थी। वह कहती, ''मैं चालीस बच्चों को पढ़ाती हूँ। एक भी फेल नहीं होता। और मेरे ही बच्चे फेल हो रहे हैं।'' फिर वह रोज़ शाम को बहन को गणित पढ़ाने लगी। अगर बहन से गलती हो जाती तो उसके जाँघ पर चिमटी काटती थी। हम सभी की आँखों में आँसू आ जाते थे। बहन रोती थी मगर मुँह से आवाज़ नहीं निकाल सकती थी। यह सब रोज़ एक घण्टा सहना पड़ता था। अंत में वार्षिक परीक्षा हुई और गणित में उसको 60 प्रतिशत अंक मिले। माँ को तो संतोष हुआ पर मुझे उस बात का आज भी गुस्सा है। माँ तो गर्व से कहती है कि '6 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक लाई थी मैं, तभी तो आज बैंक में अफ़सर है।' पर मेरा सवाल यह है कि क्या वही पढ़ाई बिना यातना के नहीं हो सकती थी?

इस घटना का असर मुझ पर ज़रूर पड़ा होगा। अभी हाल ही में मैंने अपने गाँव की एक लड़की को अंग्रेज़ी पढ़ाई। उसे 24 प्रतिशत अंक मिले थे। सप्लीमेंटरी परीक्षा दो माह बाद होनी थी। सो, मैं पूरी गर्मी की छुट्टियों में घर पर रही और उसे रोज़ एक घण्टा अंग्रेज़ी पढ़ाई। इस दौरान एक बार भी मारना तो दूर, छुआ तक नहीं। जब मैं उसे पढ़ने को कहती थी तो वह कहती, ''बहनजी मुँह दुखने लगा।'' परन्तु मैंने उसे कभी डाँटा भी नहीं। अंत में परीक्षा में उसे 85 प्रतिशत अंक मिले। तब हम दोनों को बहुत खुशी हुई।

यानी, बचपन से मन में चले आ रहे मेरे सवाल का हल अब जाकर मुझे मिला कि ऐसे भी हो सकती है पढ़ाई – बिना यातनाओं के।

● लॉरी बेंजामिन, केसला, होशंगाबाद, म. प्र.

● चित्र: शिवेन्द्र पांडिया



चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

जुलाई

सोम	31	3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरू		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29
रवि	2	9	16	23	30

अगस्त

सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	30
गुरू	3	10	17	24	31
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	
रवि	6	13	20	27	

स्वतंत्रता दिवस/रक्षाबंधन – 15 अगस्त
जनमाष्टमी – 23 अगस्त
गांधी जयंती – 2 अक्टूबर
विजया दशमी/दशहरा – 7 अक्टूबर
दीपावली – 26 अक्टूबर



मोहसिन रिज़वी, सात वर्ष

सितम्बर

सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरू		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30
रवि	3	10	17	24	



चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

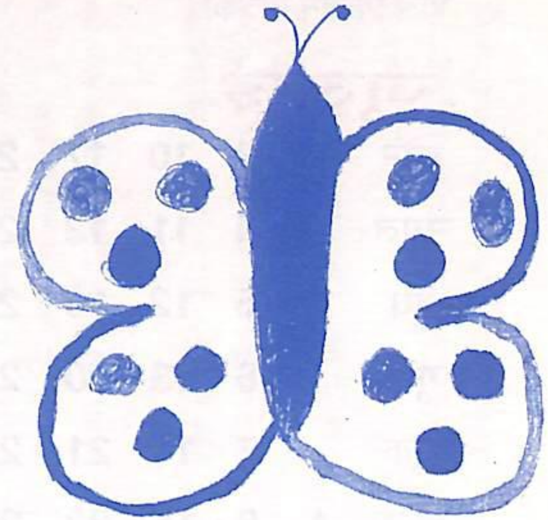
जनवरी

सोम	31	3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरू		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29
रवि	2	9	16	23	30

ईद उल फितर – 9 जनवरी
गणतंत्र दिवस – 26 जनवरी
महाशिवरात्रि – 4 मार्च
ईदुज्जुहा – 17 मार्च
होली – 20 मार्च

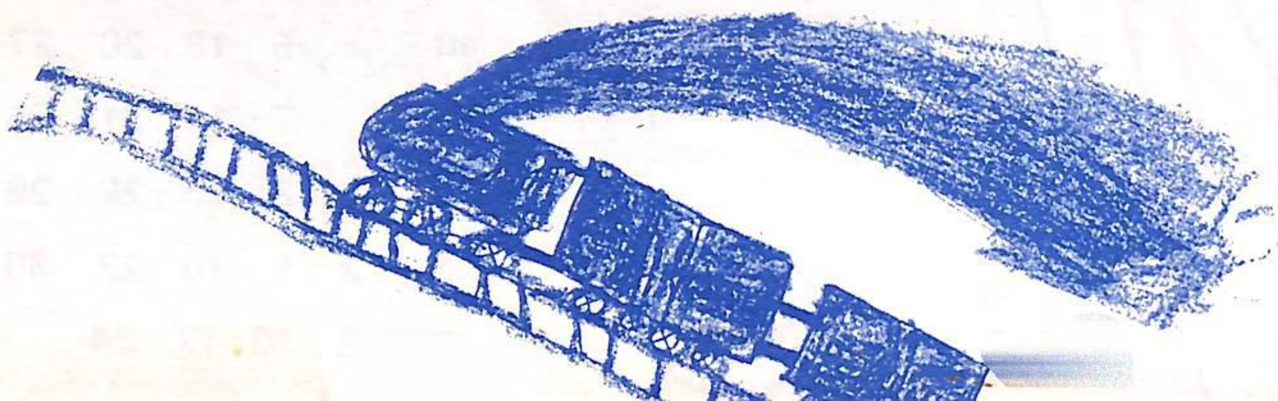
फरवरी

सोम		7	14	21	28
मंगल	1	8	15	22	29
बुध	2	9	16	23	
गुरू	3	10	17	24	
शुक्र	4	11	18	25	
शनि	5	12	19	26	
रवि	6	13	20	27	



मार्च

सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरू	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	31
शनि	4	11	18	25	
रवि	5	12	19	26	



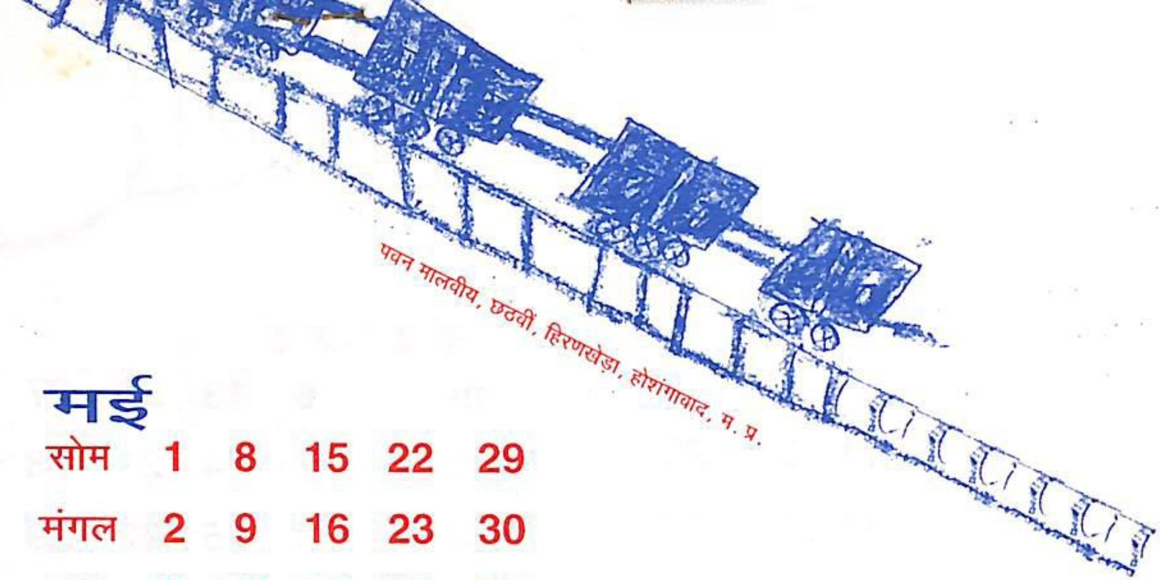
2000

अप्रैल

सोम		3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरू		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29
रवि	2	9	16	23	30



फेहरया गारदया वसावे, चिमलखेड़ी महाराष्ट



पवन मालवीय, छठवीं, हिरणखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

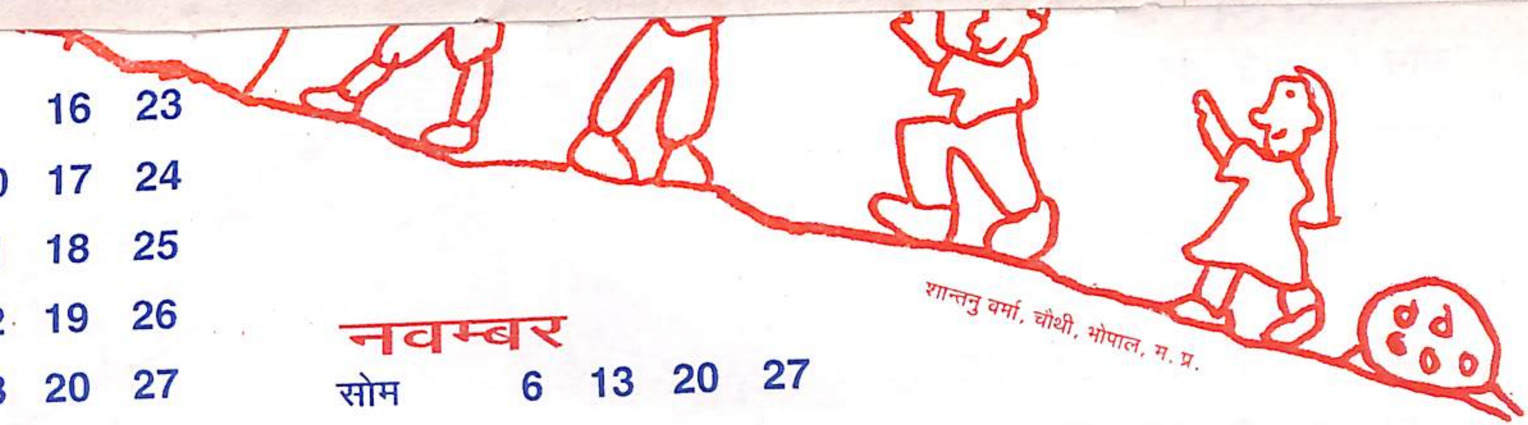
मई

सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	31
गुरू	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	
रवि	7	14	21	28	

राम नवमी – 12 अप्रैल
डॉ. अम्बेडकर जयंती – 14 अप्रैल
महावीर जयंती/मोहर्रम – 16 अप्रैल
गुड फ्रायडे – 21 अप्रैल
बुद्ध पूर्णिमा – 18 मई
मिलाद उन नबी – 15 जून

जून

सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरू	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	
रवि	4	11	18	25	



शान्तनु वर्मा, चौथी, भोपाल, म. प्र.

अक्टूबर

सोम	30	2	9	16	23
मंगल	31	3	10	17	24
बुध		4	11	18	25
गुरू		5	12	19	26
शुक्र		6	13	20	27
शनि		7	14	21	28
रवि	1	8	15	22	29

नवम्बर

सोम		6	13	20	27
मंगल		7	14	21	28
बुध	1	8	15	22	29
गुरू	2	9	16	23	30
शुक्र	3	10	17	24	
शनि	4	11	18	25	
रवि	5	12	19	26	

दिसम्बर

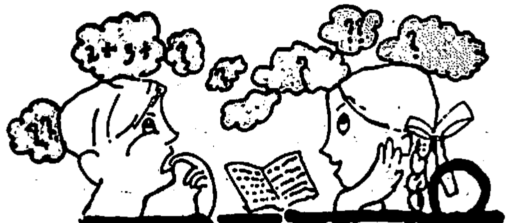
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरू		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30
रवि	3	10	17	24	31

2000



मयंक कुमार गौर, दूसरी, खिरकिया, हरदा, म. प्र.

गुरू नानक जयंती – 11 नवम्बर
गुरू घासीदास जयंती – 18 दिसम्बर
क्रिसमस डे (बड़ा दिन) – 25 दिसम्बर
ईद उल फितर – 28 दिसम्बर



माथापच्ची

(1)

सात आदमी एक जगह ठहरे थे। उनके पास कुछ नारियल थे। रात में उनमें से एक आदमी ने सोचा कि क्यों न सारे के सारे नारियल लेकर मैं भाग जाऊँ? वह अभी नारियल अपने झोले में भर ही रहा था कि दूसरा आदमी जाग गया। पहले ने दूसरे को अपने प्लान में शामिल किया और दोनों ने नारियल आपस में बाँटना शुरू किए। दोनों बराबर-बराबर नारियल चाहते थे पर एक नारियल बच गया।

दोनों में उस एक नारियल के पीछे बहस शुरू हो गई। शोर से तीसरा आदमी भी जाग गया। तब उन्हें सारे नारियलों को तीनों में बाँटना पड़ा। तीनों को बराबर नारियल मिलने के बाद एक नारियल फिर बच गया। इसी बीच चौथा आदमी जाग गया। चारों में बँटवारा हुआ; फिर एक नारियल बच गया।

फिर पाँच लोगों में बँटवारा हुआ और फिर छह लोगों में। लेकिन हर बार एक नारियल बच जाता था। आखिरकार जब सातवाँ आदमी भी जाग गया और सातों में बँटवारा हुआ तब जाकर सारे नारियल बराबर-बराबर बँट पाए।

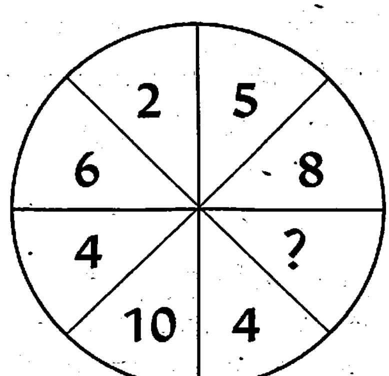
क्या तुम बता सकते हो कि इन मज़ेदार लोगों के पास कुल कितने नारियल थे?

(2)

कपड़ों के एक व्यापारी ने अपनी दुकान में कमीज़ों की कीमत पहले 20 प्रतिशत बढ़ा दी। फिर जब उसने देखा कि बिक्री बहुत ही कम हो रही है तो उसने कीमत वापस पहले जितनी ही रखने की सोची।

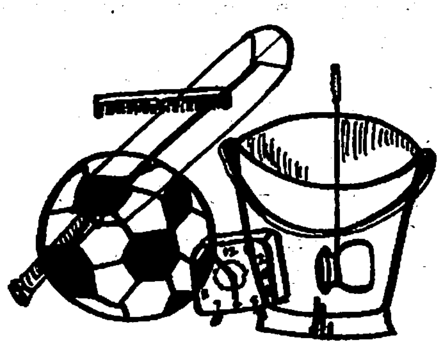
तुम यह बताओ कि बढ़ी हुई कीमत पर अब उसे कितने प्रतिशत दाम घटाना पड़ेगा ताकि कमीज़ वापस पहले की कीमत पर आ जाए?

(3)



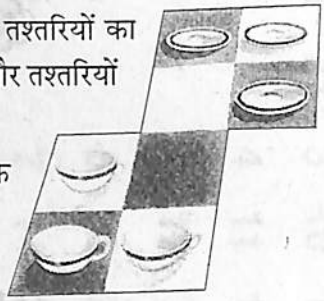
इस आठ भागों में बँटे पहिये में एक को छोड़कर सभी भागों में कोई न कोई संख्या लिखी है। इन सबका आपस में एक सम्बंध भी है। अगर हमें यह सम्बंध पता चल जाए तो हम खाली भाग में आने वाली संख्या का भी पता लगा सकते हैं, है न? तो जुट जाओ सम्बंध और फिर खाली भाग की संख्या की तलाश में।

(4)



इस चित्र में कई सारी चीज़ें छिपी हुई हैं। क्या तुम बता सकते हो क्या-क्या?

(5)



शतरंज जैसा ही यह एक और खेल है। इसमें हमने मोहरों की तरह कप और तश्तरियों का इस्तेमाल किया है। तुम्हें करना यह है कि कपों की जगह तश्तरियों को लाना है और तश्तरियों की जगह कपों को। यानी दोनों की जगह आपस में बदलनी हैं।

यह सब करने के लिए तुम इन कपों या तश्तरियों को एक बार में सिर्फ एक खाना बाएँ-दाएँ या आगे-पीछे चला सकते हो। खाली खाने में जाने के लिए कप और तश्तरी आपस में जगह बदल सकते हैं या फिर एक-दूसरे के ऊपर से छलाँग भी लगा सकते हैं। लेकिन वे तिरछी चाल नहीं चल सकते।

खेल तो तुम बाद में भी खेल सकते हो। अभी यह बताओ कि सारे कप और तश्तरियों की जगह अदल-बदल करने के लिए कुल कितनी चालें लगेंगी?

(6)

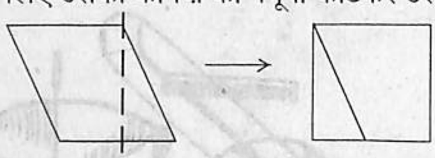


गणित की शौकीन मुनिया को आज अम्मी ने काम पर लगा दिया है। काम भी मटर के दाने निकालने का। पर मुनिया का दिमाग तो उसी का ठहरा। कुछ देर दाने निकालने के बाद वह लगी पहेलियाँ बुझाने। उसकी ताज़ी पहेली यह है कि अगर जितनी फलियाँ वह छील चुकी है, उन सभी में उतने ही दाने थे जितने अभी वाली फली में हैं तो उसने अब तक कितनी फलियाँ छील ली होंगी? पता लगाने के लिए दाने गिनने की छूट दी है उसने।

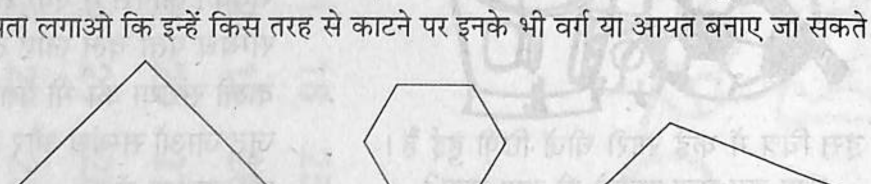
है न अजीब चक्कर। पर अब मुनिया ने पूछा है तो हल तो ढूँढना ही पड़ेगा। हमारे साथ तुम भी जुट जाओ!

(7)

तुमने अपने गाँव में ज़मीन की नपाई करते लोगों को देखा होगा। शहर में रहने वालों ने भी प्लॉट कटने से पहले जमीन की नपाई होते देखा होगा। किसी तिरछे चौकोर ज़मीन के टुकड़े को नापने के लिए उसका कागज़ का नमूना काटकर उसे एक वर्ग में बदलकर उसका क्षेत्रफल आसानी से नापा जा सकता है। है न। यह देखो, ऐसे -



बेबिलोनियाई लोग ज़मीन नापने के लिए यही तरीका इस्तेमाल करते थे। लेकिन वो लोग कुछ मुश्किल आकार की ज़मीन नापने के लिए क्या करते होंगे? जैसे कि यहाँ कुछ उदाहरण दिए हैं। इनके बारे में तुम सोचकर पता लगाओ कि इन्हें किस तरह से काटने पर इनके भी वर्ग या आयत बनाए जा सकते हैं।



रस-भरी खीर

रावेन्द्रकुमार 'रवि'



सरस एक प्यारा-प्यारा बच्चा है। वह नैनीताल में रहता है। नैनीताल हरे-भरे पहाड़ों से घिरा हुआ है।

सरस का पाँचवाँ जन्म-दिन दस नवम्बर सन दो हज़ार को पड़ेगा। उसने स्कूल जाना शुरू कर दिया है।

सरस को ऐसी किताबें देखना बहुत अच्छा लगता है, जिसमें सुन्दर-सुन्दर चित्र बने होते हैं।

सरस ने एक नन्हा-मुन्ना पिल्ला पाल रखा है। उसका नाम पुल्लू है। पुल्लू सरस के साथ मिलकर खूब खेलता है। बड़े मज़े करता है। पुल्लू सरस के पापा या मम्मी के साथ उसे स्कूल भी छोड़ने जाता है। इस साल होली के बाद नौ मार्च की रात में पुल्लू का जन्म हुआ था।

सरस का पूरा नाम 'सरस पायस' है। वह अपने पुल्लू को भी 'पुल्लू पायस' कहता है।

सरस के पापा कविता रचते हैं। वे उसको अच्छी-अच्छी कविताएँ सुनाते हैं। मार्च में उन्होंने 'चकमक' में एक कविता पढ़ी, "हाथी चल्लम-चल्लम"। उन्होंने यह कविता सरस को सुनाई -

"हल्लम-हल्लम होदा...
दिन-भर घूमेंगे हाथी पर हल्लर-हल्लर..."

कविता सुनकर सरस भी गुनगुनाने लगा, ''हल्लर-हल्लर होदा!'' उसे इतना ही याद रहा।

जैसी कि छोटे बच्चों की आदत होती है ... उन्हें जो भी बात अच्छी लगती है वे उसे बार-बार दोहराते रहते हैं।

जब भी उसे याद आती वह गुनगुनाने लगता...

''हल्लर-हल्लर होदा!''

एक दिन पुल्लू ने दौड़ लगाई और अपने आगेवाले पैरों से क्यारी में जल्दी-जल्दी गड्ढा खोद दिया।

सरस ने पापा से पुल्लू की शिकायत कर दी... ''पापा! पापा! पुल्लू दौड़कर गया। उसने गड्ढा खोदा। आपका फूल उखाड़ दिया।''

पापा ने पुल्लू को डाँटा, तो वह पूँछ दबाकर चुपचाप बैठ गया। उन्होंने फूल का पौधा फिर से लगा दिया।

सरस पास में खड़ा देख रहा था और पुल्लू पास में बैठा देख रहा था। सरस को फिर याद आ गई। वह गुनगुनाने लगा...

''हल्लर-हल्लर होदा!''



पापा ने पुल्लू की ओर देखा, तो पुल्लू ने भी दाईं ओर सिर झुकाते हुए प्यार-से पापा की ओर देखा। पुल्लू ने पूँछ हिलाई, तो पापा के मुँह से निकला... ''पुल्लू ने गड्ढा खोदा!''

फिर क्या था! पुल्लू की पूँछ

हिलती गई और सरस के पापा की कविता रचती गई..

"मोटा-मोटा हाथी आया,
हल्लर-हल्लर होदा!
उसे देखकर पुल्लू दौड़ा,
गड्ढा उसने खोदा!
पापाजी ने उसमें रोपा,
नन्हा-मुन्ना पौधा!"

पापा ने सरस को पूरी कविता याद करा दी।

मई में सरस की नानी आईं। सरस ने उनको यह कविता सुनाई, तो उन्होंने सरस के दोनों गालों पर प्यार किया और बोलीं... "मेरी रस-भरी खीर!"

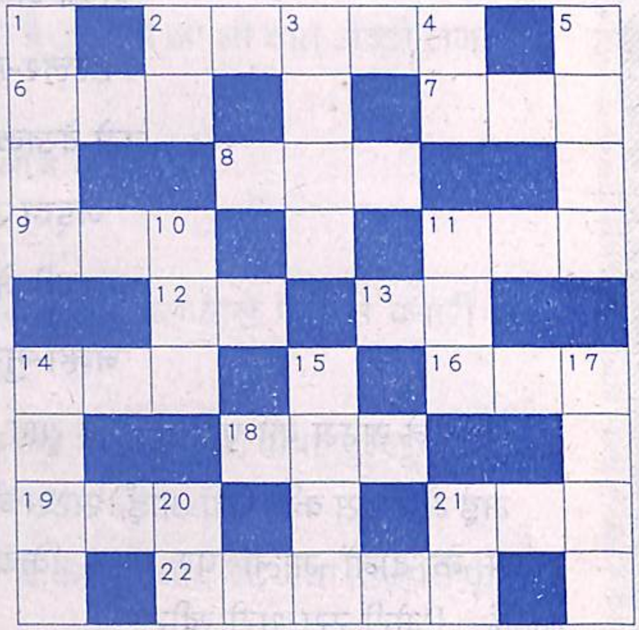
इसके बाद उन्होंने सरस को अपनी गोद में बैठा लिया। वह फिर गुनगुनाने लगा...

"हल्लर हल्लर होदा!
हल्लर-हल्लर होदा!"



सभी चित्र : आशा रोमन

वर्ग पहेली - 101



संकेत : बाएँ से दाएँ

2. हरा तवा और सिरकटे गज में हीरे, नगीने, कीमती पत्थर (5)
6. आज ...., कल उधार (3)
7. व्यापार धन्धे के व्यवसाय में लगा व्यक्ति या, एक खास समुदाय (3)
8. रामलाल में ढूँढो अफसोस या पछतावा (3)
9. दही से बनने वाली एक खाने की चीज़ (3)
11. मुसीबत (3)
12. एक फल जो कपड़े, बाल आदि धोने या साबुन बनाने में उपयोग किया जाता है (2)
13. .... करो तो मेवा मिलेगा, ऐसी कहावत है (2)
14. पता-ठिकाना (3)
16. बहुत होशियार और कुशल व्यक्ति (3)
18. जानवर मरने में सूजन है (3)
19. कोर्ट-कचहरी में मुकदमों में पैरवी करने वाले लोग (3)
21. खूब पढ़ने वाला (3)
22. बकरी का तन, लगभग (5)

संकेत : ऊपर से नीचे

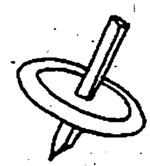
1. सोने के रंग-रूप वाला (4)
2. उस राजनैतिक पार्टी का छोटा नाम जिसका निशान कभी चक्र था (2)
3. लावा के तह में ज़ेल है (4)
4. आधे मतलब में उस समय (2)
5. महाप्रलय, जब सारी दुनिया उलट-पलट हो जाए (4)
10. इतिहास भी और दिनांक भी (3)
11. ध्वनि का दूसरा नाम (3)
14. जो अच्छा महसूस होता हो जैसे मौसम (4)
15. संगमरमर जैसी (4)
17. कुएँ में नल (4)
20. आदत (2)
21. प्रण का अशुद्ध रूप (2)

रविशंकर अजनेरिया, आमूपुरा, होशंगाबाद, म.प्र. द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित

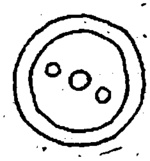
वर्ग पहेली - 101 का हल चकमक के फरवरी, 2000 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का फरवरी 2000 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।



आओ बनाएँ फिरकनी



इंजेक्शन की शीशी के ढक्कन के बीचोंबीच छेद करना और उसमें माचिस की तीली फँसाकर उसकी फिरकनी घुमाना। यह खेल तुम्हारे लिए नया नहीं है। सचमुच कितना अच्छा लगता है न, इस फिरकनी को यूँ देर तक घूमते हुए देखना!



ऐसे कई खिलौने तुम यूँ खेल-खेल में बना लेते हो। बल्कि अक्सर हम एक ही खिलौने से कई तरह से खेलते हैं। इसके लिए हमें उस खिलौने में कुछ छोटे-मोटे बदलाव करने होते हैं। हम यहाँ तुम्हें फिरकनी बनाने के कुछ तरीके बता रहे हैं। ये अलग-अलग तरह की फिरकनियाँ न सिर्फ देखने में सुन्दर हैं, बल्कि इससे खेलते हुए हम विज्ञान के कई मज़ेदार और बहुत उपयोगी सिद्धान्तों को समझ भी सकते हैं।

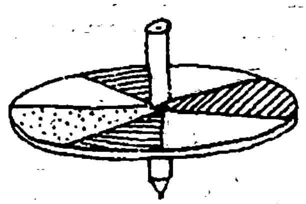


एक बटन ले लो। एक छोटी लकड़ी के एक सिरे को छीलकर नुकीला कर लो। इसे बटन में बने हुए छेद में फँसा दो। एक फिरकनी तैयार हो गई।

रंगों का मेला

अब कुछ और तरह की फिरकनियाँ बनाते हैं। मोटे कागज़ के पुष्ठे की एक गोल चकती काट लो। इस चकती को चित्र के अनुसार छह या आठ बराबर-बराबर भागों में बाँट लो। अब इन खानों में एक के बाद एक खाना छोड़कर स्केच पेन या मोम चॉक से पीला रंग भर लो। बीच के खानों में नीला रंग भर लो। अब माचिस की एक तीली ले लो। तीली को किसी एक सिरे से नुकीला कर लो। चकती के बीचोंबीच एक छेद कर उसमें माचिस की तीली फँसा दो। लो तैयार हो गई तुम्हारी नीली-पीली फिरकनी!

लेकिन यह क्या, ये फिरकनी तो घुमाते ही नीली या पीली दिखने की बजाय हरी दिखने लगी। ठहरो-ठहरो और रुककर फिरकनी के रुकने का इंतज़ार करो, देखते हैं क्या चक्कर है। अरे यह क्या, रुकते ही यह फिरकनी तो फिर नीली-पीली दिखने लगी! यह तो जादू हो गया, है न!



ऐसा ही जादू अलग-अलग रंगों के उपयोग से हम अलग-अलग तरह की फिरकनियाँ बनाकर दिखा सकते हैं। जैसे कि एक गोल चकती के आठ बराबर भागों को क्रमशः नीला और नारंगी रंग भर दो। इस चकती को घुमाने पर तुम्हें मटमैला सफेद या धूसर सा रंग दिखाई देगा।

न्यूटन की फिरकनी

तुम रंगों की सहायता से वह प्रयोग भी कर सकते हो जो वैज्ञानिक न्यूटन ने किया था। उसने एक गोल चकती पर सात बराबर भागों में इंद्रधनुष के सभी सातों रंगों को भर दिया। इस चकती को घुमाने पर उसे सफेद रंग दिखाई दिया।

यह प्रयोग न्यूटन ने यह दिखाने के लिए किया था कि प्रकाश किरण सात रंगों से मिलकर बनी होती है। ये सभी रंग आपस में इतने गड्ड-मड्ड होते हैं कि हम इन रंगों को अलग-अलग नहीं देख पाते। बल्कि इन सभी रंगों का मिला-जुला असर हमें सफेद रंग के रूप में दिखता है।

अब हम अपनी पहली फिरकनियों की घटना पर नज़र डालें तो हम पाते हैं यहाँ सभी सात रंग तो नहीं हैं। लेकिन दो रंगों का मिला-जुला प्रभाव भी हमें एक तीसरे रंग के रूप में दिखाई दे रहा है।

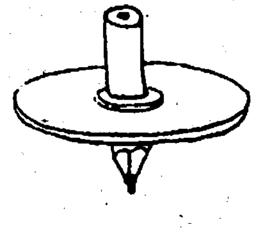
क्या तुम इन सब फिरकनियों को घुमाने पर उनके रंग के बदल जाने का कारण समझ सकते हो? इसके पीछे क्या विज्ञान छुपा है?

तुममें से कई लोग यह जानते होंगे कि प्रकृति में पाए जाने वाले सभी रंग मुख्यत: तीन रंगों के अलग-अलग अनुपात में मिलाए जाने पर प्राप्त किए जा सकते हैं। ये रंग हैं – लाल, पीला व नीला। इन्हीं तीन रंगों में से कोई दो, या फिर तीनों को अलग-अलग अनुपात में आपस में मिलाने पर हम दुनिया भर के रंग प्राप्त कर सकते हैं। अब चाहो तो गतिविधि के तौर पर तुम एक प्रयोग कर सकते हो :

फिरकनी पर कौन-कौन से रंग भरोगे ताकी उसके घूमने पर हमें कत्थई रंग दिखाई दे?

यह तो हुई रंगों की बात। पर क्या तुम जानते हो इस फिरकनी के घूमने का एक निश्चित क्रम (पैटर्न) है? यह पैटर्न क्या है? इसे देखने का एक सबसे बेहतर तरीका है – लिखने वाली फिरकनी।

लिखने वाली फिरकनी

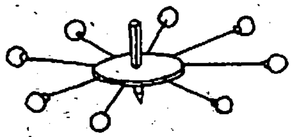


तुम्हारे पास लिखते-लिखते छोटी हो गई पेंसिल होगी। माचिस की तीली की जगह इस पेंसिल का उपयोग कर हम लिखने वाली फिरकनी बना सकते हैं। अब चाहो तो इंजेक्शन के ढक्कन में इसे फँसाओ या कोई दूसरी प्लास्टिक या मोटे पुष्ठे की चकती में। जैसे ही तुम इसे किसी सफेद कागज़

पर फिराओगे, इसका निचला लिखने वाला सिरा कागज़ पर अपना रास्ता बनाता चलेगा।

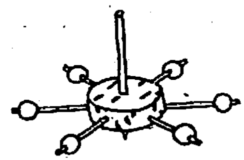
यह भी कर देखो

अब इसी लिखने वाली फिरकनी में इंजेक्शन की शीशी के ढक्कन या पुष्ठे के चारों किनारों पर आलपिन घुसाकर चित्र की तरह से बना लो।

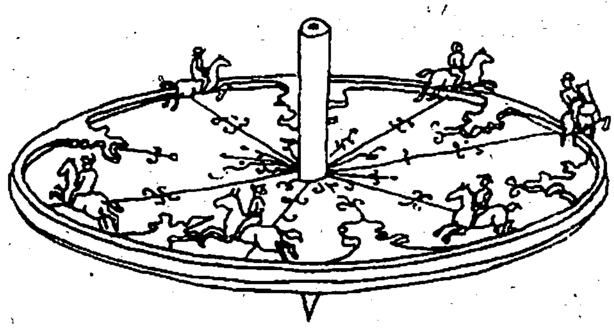


आलपिन के सभी सिरों पर समान लम्बाई के बहुत ही छोटे-छोटे धागे बाँध दो। इन धागों के सिरों पर एक-एक मोती भी पिरोकर अंत में गाँठ लगा दो। तैयार हो गई एक सुन्दर-सजीली फिरकनी।

इस फिरकनी को भी सफेद कागज़ पर फिराओ। इसका रास्ता भी पेंसिल से कागज़ पर बन जाएगा। अब देखो पहले वाली फिरकनी के रास्ते और इसके रास्ते में क्या कोई अंतर है?



सभी तरह की फिरकनियाँ बनाकर उन्हें घुमाकर देखो। तुमने क्या पाया यह हमें लिख भेजो। यदि यह सब खेल करते हुए तुम कोई और बढ़िया-सी नई फिरकनी बना डालो, या कोई ख़ास घटना देखो, तो उसे 'चकमक' के लिए ज़रूर लिखकर भेजना। हम तुम्हारे मज़ेदार खतों को अगले अंक में प्रकाशित करेंगे।



वर्ग पहेली – 98 का हल

अ	■	प	त	ग	■	क	पा	स
स	म	ता	■	ज	न	■	मि	■
म	■	का	■	रा	■	कौ	श	ल
■	बे	■	ग	ज	ब	■	■	की
ह	र	बो	ला	■	नि	शा	च	र
म	■	■	ना	न	क	■	ना	■
ला	प	ता	■	नि	■	वि	■	कि
■	नी	■	दो	हा	■	क	छा	र
त	र	नि	■	ल	प	ट	■	ण

वर्ग पहेली – 98 के सही हल भेजने वाले हैं – मयंक कुलश्रेष्ठ, ग्वालियर; देवेश नाग, उज्जैन; **म.प्र.**। अलिंद उपाध्याय, काशीपुर, **उ.प्र.**। लोचन नागर, बोंगाईगाँव, **असम**।

वर्ग पहेली – 99 के सही हल भेजने वाले हैं – हबीब अनवर राही, जावद, नीमच, **म.प्र.**।

वर्ग पहेली – 99 का हल

■	अ	प	ना	प	न	■	म	■
जै	■	थ	■	तं	■	उ	म	स
से	र	■	जा	ग	रू	क	ता	■
को	■	म	न	■	खा	ता	■	नु
तै	र	ता	■	■	■	ह	ल	क
सा	■	धि	ना	■	गु	ट	■	ता
■	आ	क़ा	श	वा	णी	■	प्रा	ची
ब	या	र	■	तु	■	र	■	नी
■	त	■	ला	ल	सा	ग	र	■

आप सभी को चकमक का एक-एक अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

बब्बर सिंह और उसके साथी



प्रसिद्ध लेखक श्रीलाल शुक्ल की लिखी 'बब्बर सिंह और उसके साथी' नामक किताब की कहानी मुख्यतः चार मित्रों बब्बर शेर, संजय, विजय और रंजना के ईदगिर्द घूमती है। लखनऊ का प्राणी उद्यान तथा वहाँ नियमित रूप से आने वाले पर्यटक भी कथा में अहम भूमिका निभाते हैं। बब्बर सिंह लखनऊ के प्राणी उद्यान में बंदिस्त एक शेर है जो गुजरात के गिर वन से, गलतफ़हमी के चलते लाया गया है।

चिड़ियाघर के निकट रहने वाला संजय, वहाँ जाने का शौकीन है। उसे क्रिकेट का चस्का अपने मित्र विजय से लगा है। विजय को चिड़ियाघर जाने का शौक संजय के कारण है और वह बेट-बॉल को अपने सिरहाने रखकर सोता है। वह संजय का पड़ौसी है।

संजय की बड़ी बहन रंजना अजमेर के एक कॉलेज में पढ़ती है। छुट्टियों में वह कभी-कभी दोनों मित्रों के साथ चिड़ियाघर जाती है। वह पंद्रह वर्ष की है।

चिड़ियाघर में रंग-बिरंगे तोते, चीतल, सांभर, बारहसिंघे, शेर, बाघ, नीलगाय, लंगूर, बंदर, मोर आदि हैं। यह स्थान लखनऊ में आने वाले पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण है।

इस किताब में लेखक ने जो दृष्टिकोण अपनाया है उससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। यह सीख भाषण के रूप में नहीं बल्कि मजेदार ढंग से दी गई है। अगर हम किताब के हर पाठ के बारे में ध्यानपूर्वक सोचें तो पाएँगे कि उसके पीछे कोई संदेश दिया गया है।

किताब में इस सामाजिक वास्तविकता पर भी सोचा गया है कि हम किसी भी व्यक्ति से मिलकर यदि पाते हैं कि वह बुरा काम कर रहा है तो वह हमेशा के लिए हमारी नज़रों में बुरा बन जाता है। हम उस व्यक्ति को अलग दृष्टिकोण से नहीं देखते। यह नहीं सोचते कि वह शायद मजबूरन बुरा काम या व्यवहार कर रहा हो।

जब संजय और विजय ने चिड़ियाघर के चौकीदार को एक-एक रुपया वसूलते देखा तो वह उनकी नज़रों में गिर गया। बब्बर सिंह के आग्रह पर ही उन्होंने उसकी जासूसी की और पता लगाया कि चौकीदार अपनी बेटी का इलाज करवाने के लिए पैसे वसूलने का अवैध धंधा करता है।

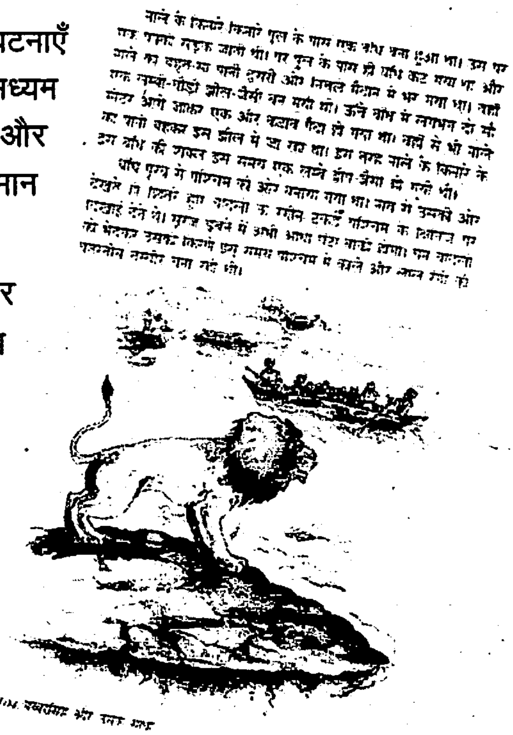
पशुओं को वन्य जीवन का आनन्द उठाने के लिए आज़ाद छोड़ने की भी बात की गई है। लेखक ने कहा है कि अगर हम उनके 'दर्शन' करने के लिए उन्हें बाड़े में कैद भी करते हैं तो बाड़े के भीतर उनके जीवन को कूड़ा-कचरा डालकर, उकसाकर, एकांत में खलल डालकर क्यों खराब करते हैं। जैसे कहानी में चौकीदार और कुछ पर्यटक करते थे।

श्रीलाल शुक्ल की बहुत प्रसिद्ध किताब 'राग दरबारी' के कारण बचपन से ही मैं उनकी चर्चा सुनती आई हूँ। वे अपनी रचनाओं में व्यंग्य के ज़रिए वर्तमान समाज की झलक पेश करते हैं। राग दरबारी का एक मज़ेदार किस्सा है : चुनाव के दौरान नेताजी ग्रामीणों से वोट माँगने जाते हैं तो मतदाता कहते हैं – चाहे जितने वोट लो, हमें कौन अचार डालना है।

'बब्बरसिंह और उनके साथी' चूँकि बच्चों की किताब है, इसलिए इसमें व्यंग्य की जगह हास्य है। यहाँ रहस्य, रोमांच, हास्य, भावनाओं व कल्पना का श्रेष्ठ मिश्रण है जो बहुत कम किताबों में देखने को मिलता है। सबकी खुराक संतुलित मात्रा में है तथा एक-दूसरे में सुन्दर सूत्र में पिरोए गए हैं।

अपरिचितों को दिए गए हास्यास्पद नाम जैसे – मुटल्लीदेवी, पतलुद्दीन, मिस्टर ऐंचा-ताना किताब को और मज़ेदार बना देते हैं। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि जैसे ही बच्चों को मुटल्लीदेवी के स्वभाव के बारे में पता चलता है वे उन्हें उस नाम से पुकारना बंद कर देते हैं।

शेर को हिन्दी में बोलते हुए दर्शाया गया है और उसकी इसी विशेषता से कहानी आगे बढ़ती है। कहानी में शेर ने ज़िम्मेदार भूमिका निभाई है। उसका नम्र और दोस्ताना स्वभाव भी पाठकों को प्रभावित करता है। दीदी रंजना की समझदारी और सब्र तथा संजय व विजय की बहस करने की क्षमता, बहादुरी और मज़ाकिया स्वभाव सराहनीय है।



इस किताब का सबसे बड़ा आकर्षण यह है कि कहानी में ऐसी घटनाएँ घटती हैं जो किसी भी आम व्यक्ति के साथ हो सकती हैं। माहौल मध्यम वर्ग का होने के कारण कहानी अपने जीवन के अधिक नज़दीक है और आसानी से समझ आ जाती है। किताब के पात्र अपने मित्र के समान लगते हैं और उनमें अपनत्व झलकता है।

पाठकों को आकर्षित करने के लिए किताब का आवरण सुन्दर व रंग-बिरंगा है। किताब में चित्रों की संख्या कम है और जो चित्र हैं वे थोड़े अस्पष्ट हैं। यही किताब की पहली तथा अंतिम कमी है।

● नित्या आसावरी, 13 वर्ष, दिल्ली

किताब का नाम :
बब्बरसिंह और उसके साथी
लेखक : श्रीलाल शुक्ल
प्रकाशक : स्कॉलास्टिक इंडिया,
मूल्य : 60 रुपए

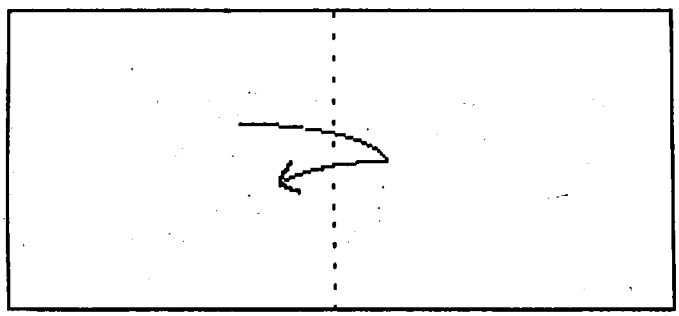
● ●

तुम भी कई पुस्तकें पढ़ते होगे। कोई किताब पढ़कर तुम्हें कैसा लगा, उसके बारे में तुम्हारी राय क्या है? यह सब चकमक को लिखोगे तो तुम्हारे बहुत सारे दोस्त भी उन किताबों से परिचित हो सकेंगे। नित्या की तरह कोई भी हमें किताबों की समीक्षा करके भेज सकता है। तो अब जो भी किताब पढ़ो इस बात का ख्याल रखना।

● ●

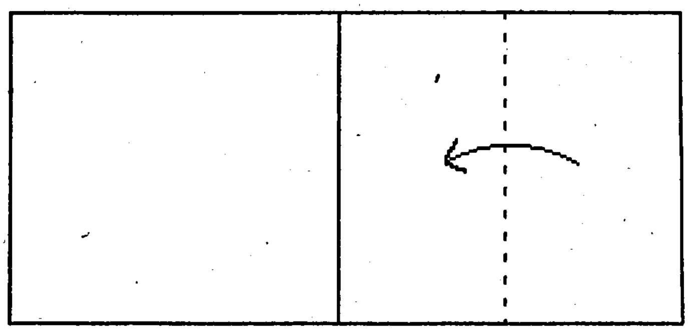


अभी तक हम लोगों ने कागज़ से कई तरह की आकृतियाँ, चिड़ियाँ, खिलौने आदि बनाए हैं। चलो, आज हम कागज़ से बुशर्ट बनाते हैं, जैसी कि तुमने पहनी हुई है। पर यह आधी आस्तीन की है। हो सकता है तुमने पूरी आस्तीन की बुशर्ट पहनी हो।

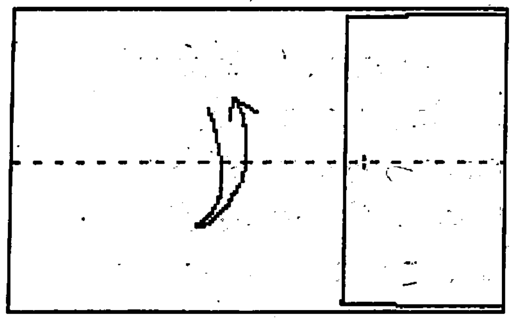


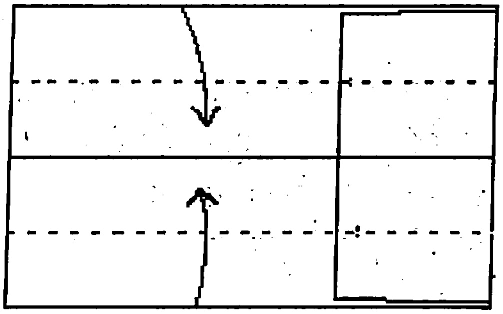
1. बुशर्ट बनाने के लिए हमें सिर्फ एक ऐसे कागज़ की ज़रूरत पड़ेगी जिसकी लम्बाई-चौड़ाई लगभग एक दस रूपए के नोट के बराबर हो। यानी कागज़ की लम्बाई उसकी चौड़ाई से दोगुनी से थोड़ी ज़्यादा हो।
   इस कागज़ को चित्र में दिखाई गई टूटी रेखा पर से मोड़ लो। मोड़ का निशान बनाकर खोल लो।

2. चित्र में दिखाई गई टूटी रेखा पर से एक तरफ के हिस्से को बीच तक लाकर मोड़ लो।



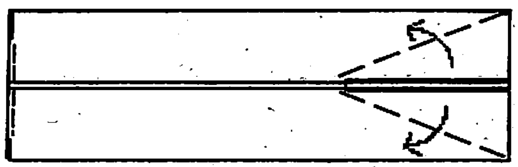
3. आकृति को एक बार फिर से चित्र में दिखाई गई टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़कर खोल लो। पर ध्यान से, मोड़ लम्बा और सीधा बनाना है।

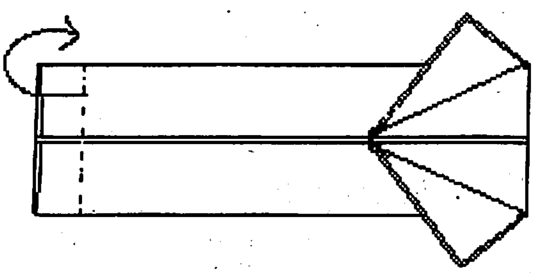




4. अब इस चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। जहाँ काग़ज़ दोहरा है वहाँ दोनों सतहों को एक साथ ही मोड़ना है।

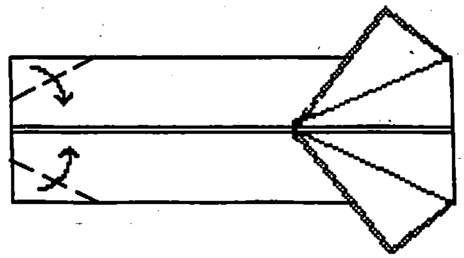
5. इस तरह की आकृति बन जाएगी। अब चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। मोड़ते समय ध्यान रखना कि क़ाग़ज़ की ऊपरवाली दोनों परतें एक साथ मुड़ेंगी।

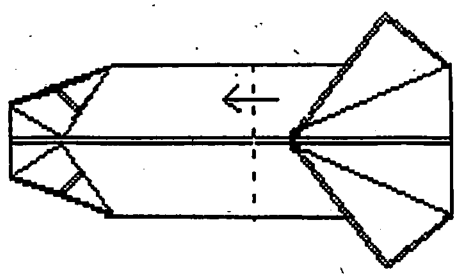




6. ऐसी आकृति बनेगी। इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा से आकृति के बाएँ सिरे को पीछे की ओर मोड़ दो।

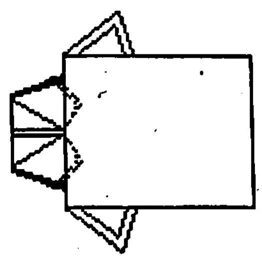
7. अब इस आकृति में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से मोड़ बनाओ। आकृति के कोने वाले हिस्सों को तीर की दिशा में अन्दर की तरफ मोड़ो। यह बन जाएगा शर्ट का कॉलर।

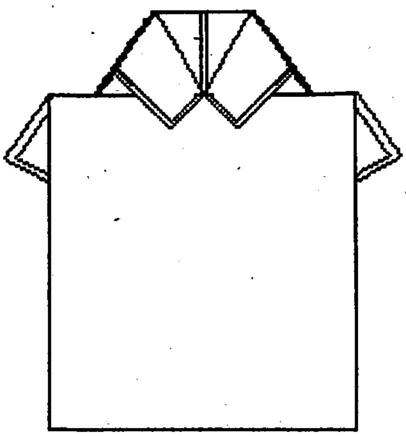




8. ऐसी आकृति मिलेगी तुम्हें! अब आकृति को चित्र में दिखाई टूटी रेखा से मोड़ो। इस तरह की दाहिना भाग बाएँ भाग पर चढ़ तो जाए लेकिन नीचे से कॉलर वाला हिस्सा दिखता रहे।

9. ऐसी आकृति मिली कि नहीं? चित्र में ऊपरी सतह के नीचे दबे हुए कॉलर के कोने दिखाए गए हैं। तुम्हें अपनी आकृति में दिखे कि नहीं? इन्हें ऊपर लाना है ताकि शर्ट का सामने का हिस्सा कॉलर के नीचे दब जाए।





10. इस तरह। बस तैयार हो गई शर्ट!





पतंग

पतंग है प्यारी-प्यारी रंगोंवाली
दस रुपए में खूब सारी
ले लो बाजी मंझा
और लड़ाओ खूब



उड़ते समय लगती हवाई जहाज
न लगता डीज़ल पेट्रोल
बस चाहिए हवा डोर
कितनी प्यारी रंगों वाली
मेरी पतंग।

● कविता और चित्र : कृष्णा,
दस वर्ष, फैजाबाद, उ. प्र.





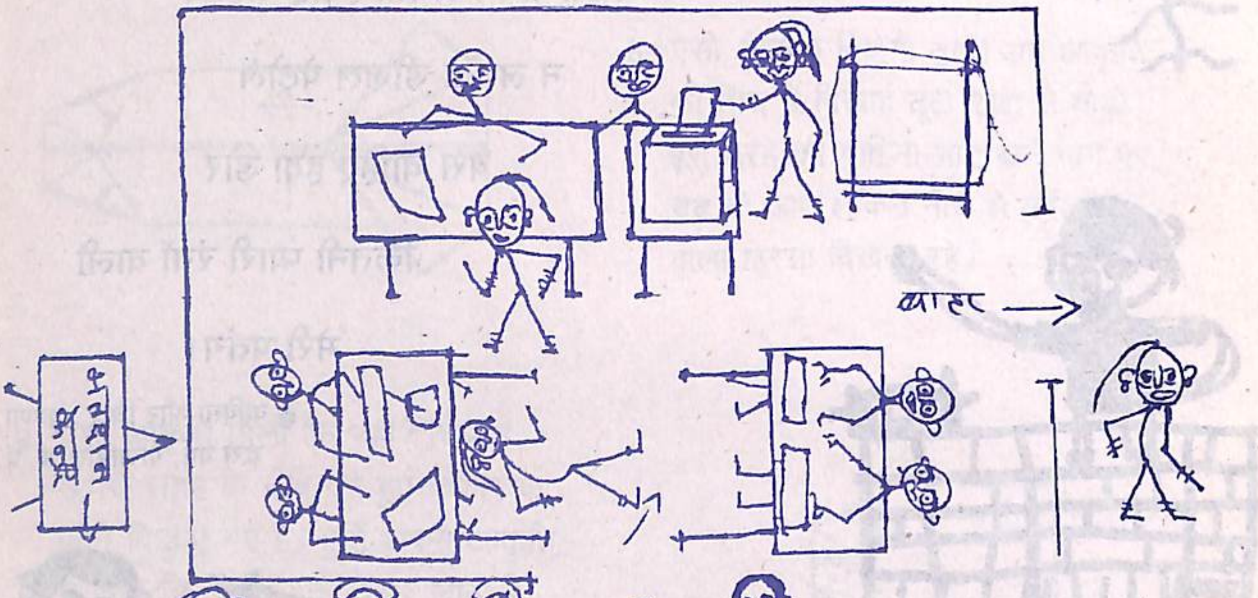
ठंडी

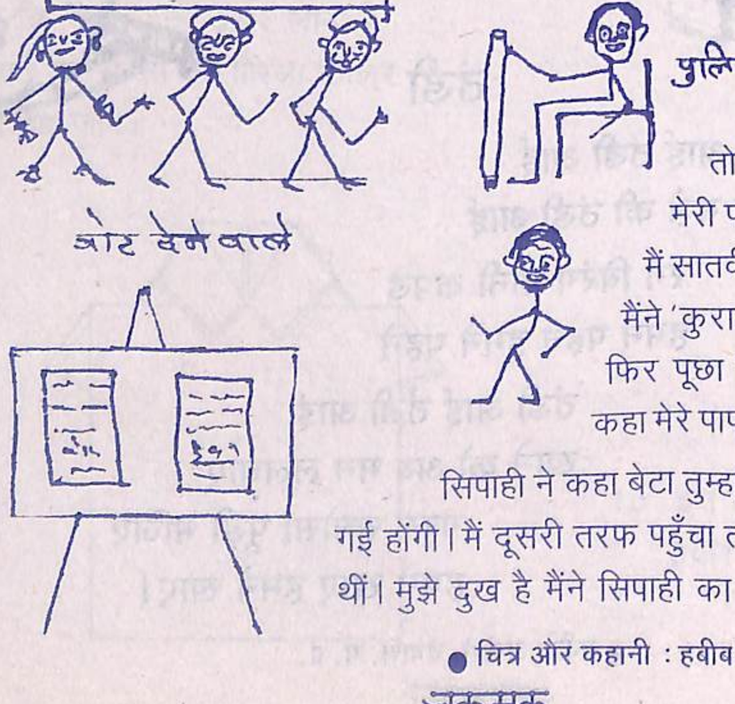
ठंडी आई ठंडी आई
बहुत मज़े की ठंडी आई
रंग बिरंगे ऊनी कपड़े
हमने पहने हमने पहने
ठंडी आई ठंडी आई
खाने को अब मन ललचाए
गरम समोसा पूड़ी भजिए
हमने खाए हमने खाए।

● प्रवीण अनोसे, देवास, म. प्र.

वोट ऐसे देते हैं

वोट कैसे देते हैं मुझे जानने का शौक था। वोट वाले दिन मैं अपने पापा के साथ वोट डालने जाने लगा, तो उन्होंने मुझे डाँटकर भगा दिया। मैं चुपके से अपनी अम्मी के साथ चला गया। मैंने देखा कुछ लोग लाईन में खड़े थे। दो बोर्डों पर कुछ लिखा हुआ था। और कागज चिपके हुए थे। कुर्सी पर सिपाही बैठा था। उसने मुझे रोक लिया। मेरी मम्मी कमरे में गई। एक टेबल थी जहाँ कुर्सी पर दो आदमी बैठे थे। एक ने मेरी मम्मी का नाम पूछा। नाम बताने पर दूसरे ने मेरी मम्मी के हाथ की उंगली पर निशान लगाया। और वोट पर दस्तखत कराए और वोट का कागज दे दिया। फिर वह पर्दे वाली टेबल पर गईं। और थोड़ी देर में वापस आईं और वोट पेटी में डाल दिया। यह सब मैं सिपाही के





पास खड़ा देख रहा था। सिपाही ने मेरा नाम पूछा तो मैंने अपना नाम बताया। उन्होंने मेरी पढ़ाई के बारे में पूछा। मैंने कहा मैं सातवीं और उर्दू पाँचवीं पढ़ता हूँ और मैंने 'कुरान' एक बार खत्म कर लिया है। फिर पूछा कि उर्दू कौन पढ़ाता है? मैंने कहा मेरे पापा पढ़ाते हैं। फिर मैं चुप हो गया। सिपाही ने कहा बेटा तुम्हारी माँ दूसरे दरवाज़े से निकल गई होंगी। मैं दूसरी तरफ पहुँचा तो मेरी मम्मी मेरी राह देख रही थीं। मुझे दुख है मैंने सिपाही का नाम नहीं पूछा।

● चित्र और कहानी : हबीब अनवर राही, सातवीं, नीमच, म.प्र.

एक मज़ेदार खेल

चिड़िया उड़ी फुर्र



तुम्हारे लिए एक खेल। अगर तुम किसी मज़ेदार खेल की तलाश में हो। यह खेल सीख लो, फिर चाहो तो अपने साथियों के साथ खेलो या चाहो तो अपने मोहल्ले के छोटे-छोटे बच्चों को यह खेल खिलाओ। खेलने वालों को भी मज़ा आएगा और खिलाने वाले को भी।

जो इस खेल में भाग लेना चाहते हों वो सभी एक गोला बनाकर खड़े हो जाएँ। जब सब खड़े हो जाएँ तब सबको यह निर्देश समझा दो।

गोले के बीच में खड़ा व्यक्ति बोलेगा। मान लो तुम खुद गोले के बीच में खड़े हो तो तुम बोलोगे 'चिड़िया' तो गोले में खड़े बच्चे कहेंगे 'फुर्र'। तुम कहोगे 'कौआ' तो बाकी सब कहेंगे 'फुर्र'। और जब तुम कहोगे 'हाथी' तो गोले में खड़े बच्चे कहेंगे 'चलता है'।

अब खेल शुरू करो। दो या तीन बार पक्षियों के नाम लो। गोले में खड़े सभी कहेंगे 'फुर्र'। जब किसी ज़मीन पर चलने वाले जानवर का नाम लोगे तो गोले में खड़े कुछ बच्चे फिर से 'फुर्र' कहेंगे जबकि इस बार उन्हें कहना चाहिए 'चलता है'।

इसी तरह यह खेल चलता रहेगा। जो भी खिलाड़ी ध्यान नहीं रखेंगे वो ज़मीन पर चलने वाले जानवर के लिए भी 'फुर्र' कह देंगे। और वो इस खेल से 'आउट' हो जाएँगे।

तो तुम भी अपनी टोली के साथ यह खेल खेलो। फिर देखो मज़ा आया या नहीं। अपने अनुभव हमें लिखना।

यहाँ से काट लें

एकलव्य का नया प्रकाशन

विनय दुबे की लम्बी कविता

छुटकी गिलहरी

भोपाल के एक मोहल्ले अहमदाबाद में एक पेड़ पर रहने वाली छुटकी गिलहरी राजा की सवारी देखने गई। और, फिर वहाँ एक घटना घटी। छुटकी गिलहरी और राजा ने मिलकर क्या किया? तुम जानना चाहोगे?



किताब मँगाने के लिए किताब की कीमत और साथ में रजिस्टर्ड डाक का खर्च 15 रुपए जोड़कर मनीऑर्डर से भेजें।

छुटकी गिलहरी
मूल्य : 12.00 रुपए

मनीऑर्डर भेजने के लिए पता
एकलव्य
ई - 1/25 अरेरा कॉलोनी,
भोपाल, 462 016 म. प्र.

.... यहाँ से काट लें ....

चकमक के सदस्य बनें आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन | | | | | | |





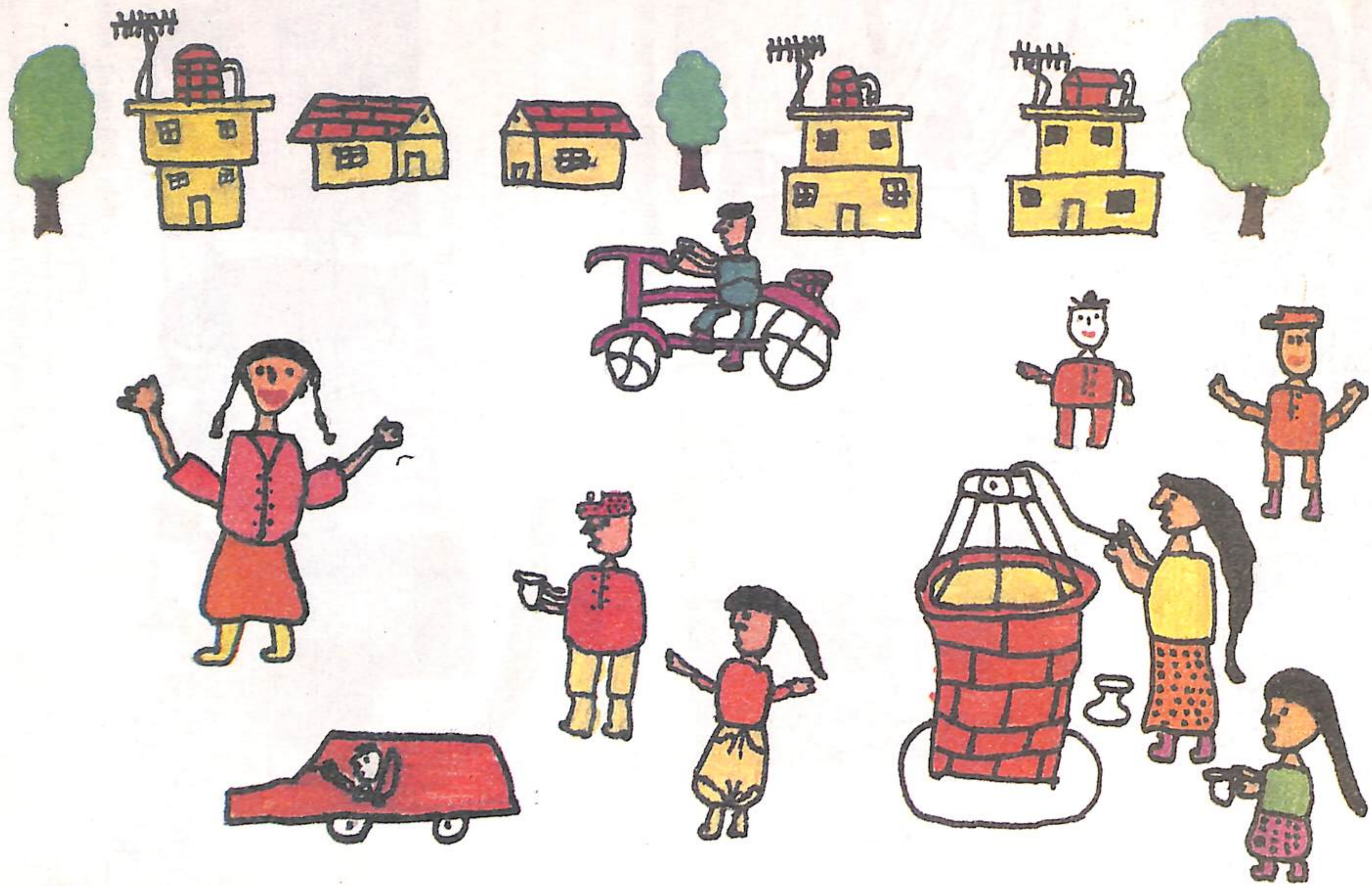
तनु गौतम, आठ वर्ष, किशनपुर, कानपुर, उ.प्र.



निलेष जोशी, सातवीं, भावनगर, गुजरात

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक MP-2/P-431/99



सतविन्दर कौर, चौथी, खन्ना, पंजाब